INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

2022

2 LEVEL



HANDWRITTEN NOTES

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

भाग-4 (A) सामाजिक अध्ययन (पार्ट – 2)

whatsapp-https://wa.link/cptty41website-https://bit.ly/reet-level-2-sstnotes

नोट -

प्रिय छात्रों, Infusion Notes (इन्फ्यूजन नोट्स) के राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) LEVEL – 2 के sample notes आपको पीडीऍफ़ format में "फ्री" में दिए जा रहे हैं और complete Notes आपको Infusion Notes की website या (Amazon/Flipkart) से खरीदने होंगे जो कि आपको hardcopy यानि बुक फॉर्मेट में ही मिलेंगें, या नोट्स खरीदने के लिए हमारे नंबरों पर सीधे कॉल करें (8504091672, 8233195718, 9694804063) । किसी भी व्यक्ति को sample पीडीऍफ़ के लिए भुगतान नहीं करना है । अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसकी शिकायत हमारे Phone नंबर 8233195718, 0141-4045784 पर करें, उसके खिलाफ क़ानूनी कार्यवाई की जाएगी ।



whatsapp-https://wa.link/cptty42website-https://bit.ly/reet-level-2-sstnotes

- **राजस्थान का भूगोल एवं संसाधन**

1. सामान्य परिचय
2. भौतिक प्रदेश
3. जलवायु
4. अपवाह प्रणाली, (नदियाँ एवं झीलें)
5. मृदा , जल –संरक्षण एवं संग्रहण
6. कृषि फसलें
7. खनिज एवं उर्जा संसाधन
8. राजस्थान की प्रमुख नहरें एवं नदी घाटी परियोजनायें
9. परिवहन
10. उद्योग एवं जनसंख्या
11. पर्यटन स्थल
12. वन एवं वन्यजीवन

- **राजस्थान का इतिहास**

1. राजस्थान इतिहास के प्राचीन स्रोत

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

2. प्राचीन सभ्यताएँ

3. राजस्थान के प्रमुख राजवंशों का इतिहास

4. 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान

5. राजस्थान में प्रजामण्डल

6. जनजातीय व किसान आंदोलन

7. राजस्थान का एकीकरण

8. राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

- **राजस्थान की कला व संस्कृति**

1. राजस्थान की विरासत (किले , दुर्ग, महल,स्मारक, छतरियां, मंदिर)
2. राजस्थान के मेले, त्यौहार एवं कलाएं,
3. राजस्थान की चित्रकला
4. राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य
5. लोक देवता, लोक देवियाँ
6. लोक संत
7. लोक संगीत एवं संगीत, वाद्य यंत्र,

FREE SAMPLE

8. राजस्थान की हस्तकला एवं स्थापत्य कला,

9. रीत रिवाज एवं प्रथाएँ

10. राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण,

11. राजस्थान की भाषा एवं साहित्य

- बीमा एवं बैंकिंग प्रणाली

1. बीमा एवं बैंक के प्रकार

2. भारतीय रिजर्व बैंक और उसके कार्य

3. सहकारिता एवं उपभोक्ता जागरूकता

- शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे -I

1. सामाजिक विज्ञान /सामाजिक अध्यन की संकल्पना एवं प्रकृति

2. कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएं, क्रियाकलाप एवं विमर्श;

3. सामाजिक विज्ञान / सामाजिक अध्यन के अध्यापन की समस्याएँ

4. समालोचनात्मक चिन्तन का विकास

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- **शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे- II**

1. **पृच्छा / आनुभविक साक्ष्य**
2. **शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री**
3. **सूचना प्रौद्यौगिकी प्रायोजना कार्य**
4. **सीखने के प्रतिफल एवं मूल्यांकन**

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – I

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।

मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।

महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।

जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक "मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस" में किया है।

जॉर्ज थॉमसः- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 1801 तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।

विलियम फ्रैंकलिनः-विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।

अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "अबुल फजल" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुभूमि" शब्द का प्रयोग किया है।

FREE SAMPLE

1829 ईस्वी में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक "एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" में सर्वप्रथम राजस्थान को "रजवाड़ा" या राजस्थान का नाम दिया था।

कर्नल जेम्स टॉडः- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1821 के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड UK के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड को "राजस्थान के इतिहास का पितामह" कहा जाता है।

कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को "सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" के नाम से भी जानते हैं।

इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "गौरीशंकर - हरीशचंद्र ओझा" ने किया था। इसे हिंदी में "प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण" कहते हैं।

महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम "टाडगढ़" रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जोकि आज अजमेर जिले की तहसील का मुख्यालय है।

(ख) राजस्थान की स्थितिः-

प्रिय छात्रों, राजस्थान की स्थिति को हम सर्वप्रथम पृथ्वी पर तत्पश्चात एशिया में और फिर भारत में देखेंगे।

(I) राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" परः-पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा-

(क) अंगारालैंड/युरेशियल प्लेट

FREE SAMPLE

(ख)गोंडवाना लैंड प्लेट

(ग) टेथिस सागर

(घ) पेंजिया

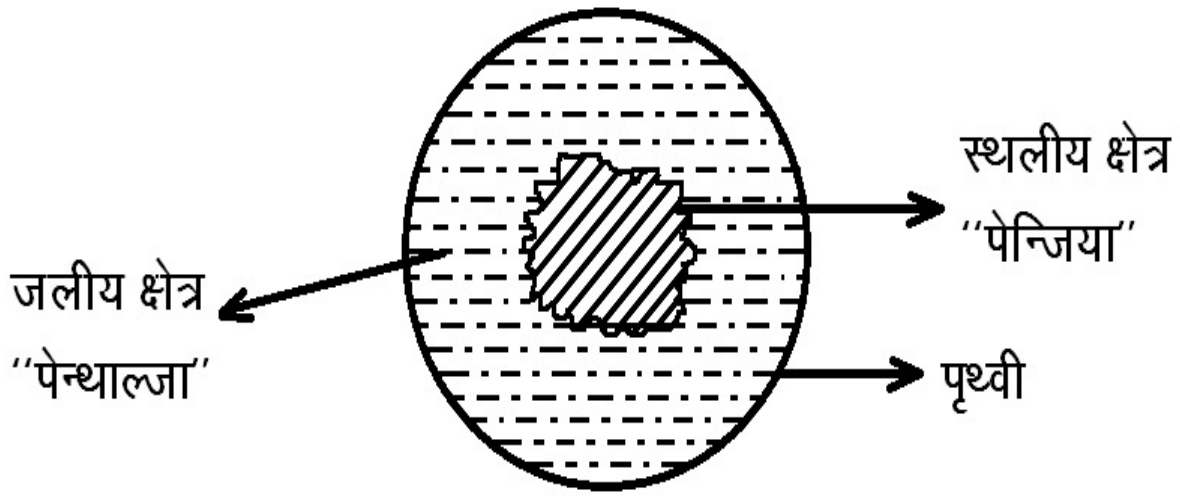
(ङ) पेंथाल्जा

नोटः- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बटी हुई थी

1.स्थल

2.जल

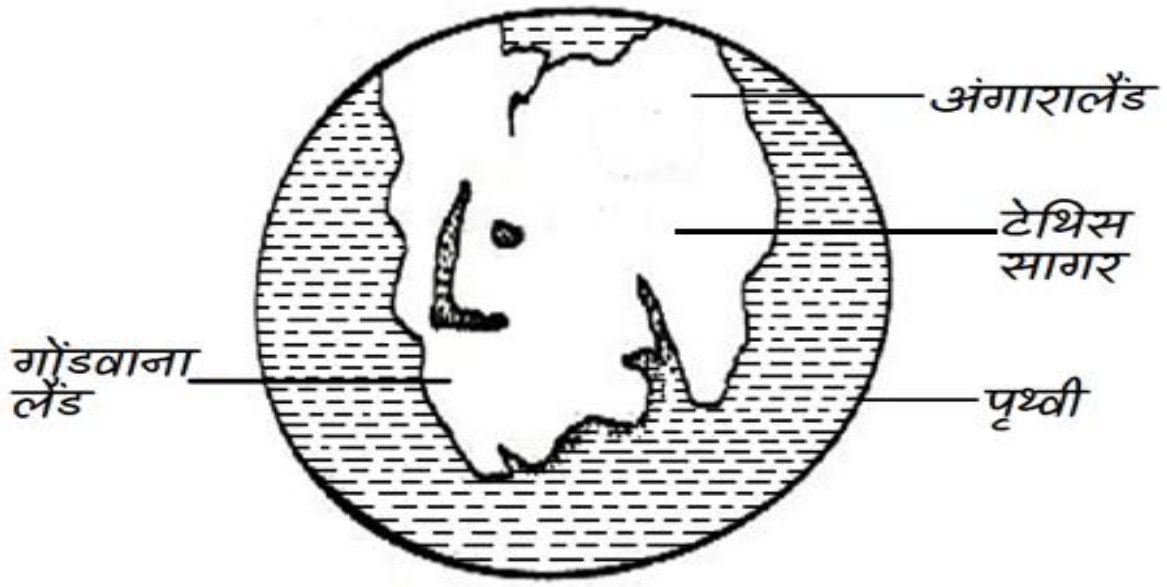
जैसा कि आज भी है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखेंतो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग हैं। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग हैं इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को "पंजिया" के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को)"पेंथाल्जा" के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-



प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पंजिया (स्थलीय क्षेत्र)दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया का निर्माण हुआ इस स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड /यूरेशियन प्लेट" के नाम से जानते हैं।

इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "गोंडवाना लैंड"'प्लेट' के नाम से जानते हैं।

दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "टेथिस सागर" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

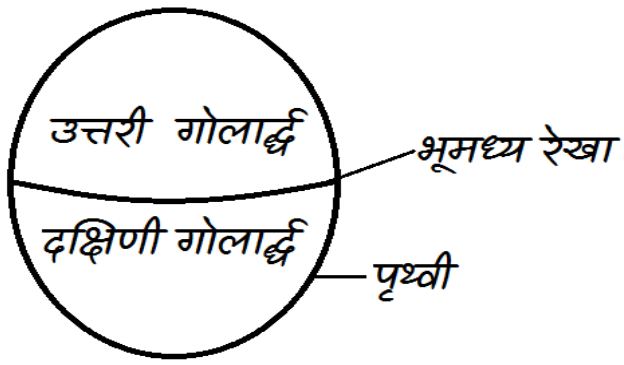


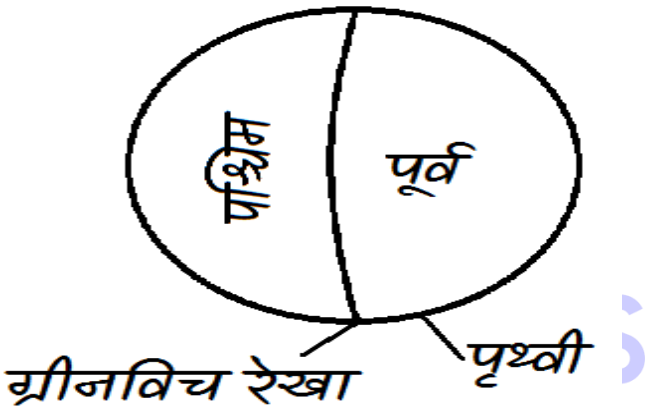
नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीले "टेथिस सागर" के अवशेष है तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वत माला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से हैं।

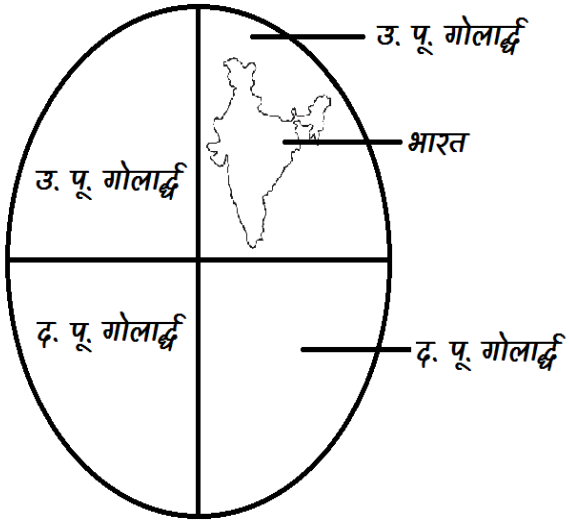
टेथिस सागर- टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था और

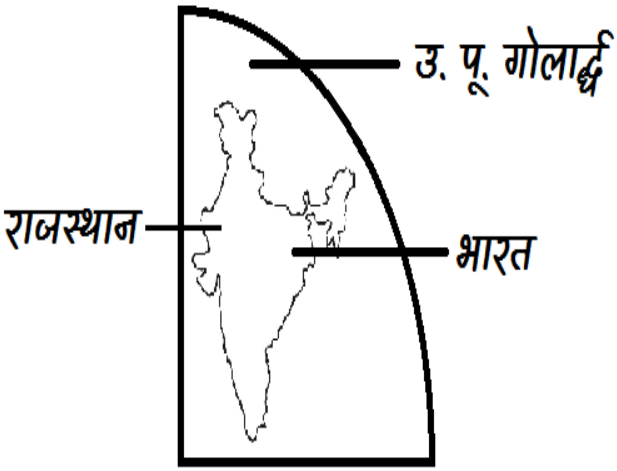
इसी में जमा अवसादो के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरुप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

प्रिय छात्रों, अब तक हम अंगारालैंड, गोंडवानालैंड, टेथिस सागर, पेंजिया तथा पेंथाल्जा का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर चुके हैं। अब हम राजस्थान की स्थिति, पृथ्वी पर का अध्ययन करते हैं। नीचे दिए गए मानचित्रों को ध्यान से समझिए-









प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

मानचित्र-।

पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है–

1. उत्तरी गोलार्द्ध
2. दक्षिणी गोलार्द्ध

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है–

1. पूर्वीक्षेत्र
2. पश्चिमीक्षेत्र

(देखे मानचित्र– 2)



नोट–

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर पूरब" दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र)

2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान "दक्षिणी पश्चिम" दिशा में स्थित है। (मानचित्र – 3,4)

3. भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम में .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	

राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

FREE SAMPLE

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

अपवाह प्रणाली

(नदियाँ एवं झीलें)

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम लोग "राजस्थान का अपवाह तंत्र" के बारे में अध्ययन करेंगे। सबसे पहले जानते हैं कि क्या होता है "अपवाह तंत्र"?

अपवाह तंत्र -

जब नदी में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती हैं तब उसे अपवाह तंत्र कहते हैं अपवाह तंत्र में नदियां एवं उसकी सहायक नदियां शामिल होती हैं।

जैसे गंगा और उसकी सहायक नदियां मिल कर एक अपवाह तंत्र बनाती हैं उसी प्रकार सिंधु और उसकी सहायक नदियां जैसे झेलम, रावी, व्यास, चिनाब एक अपवाह तंत्र बनाती है, उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियां भी अपवाह तंत्र बनाती हैं। भारत की सबसे लंबी नदी गंगा है तथा सबसे बड़ा अपवाह तंत्र वाली नदी ब्रह्म पुत्र है। अब हम अध्ययन करेंगे राजस्थान के अपवाह तंत्र के बारे में।

राजस्थान में कई नदियां हैं जैसे लूनी, माही, बनास, चंबल इसके अलावा यहां पर स्थित कई झीलें भी इस अपवाह तंत्र में शामिल होती हैं ।प्रिय छात्रों जैसा कि आपको पता है राजस्थान में अरावली पर्वत माला स्थित है यह है राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है इसलिए यह राज्य की नदियों का स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित करती है। इसके पूर्व में बहने वाली नदियां अपना जल बंगाल की खाड़ी में तथा इसके पश्चिम में बहने वाली नदियां अपना जल अरब सागर में लेकर जाती है। राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करेंगे फिर उनके अन्य क्रमशः 5 एवं 3 उप भाग होंगे -

I. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण

FREE SAMPLE

2. अपवाह के आधार पर वर्गीकरण

I. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बांटा गया है -

(अ) उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान- इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी,सागी जोजड़ी घघर, कातली नदियां शामिल होती है ।

(ब) दक्षिण पश्चिमी राजस्थान - इसमें पश्चिमी बनास, साबर मती, वाकल, से शामिल होती है

(स) दक्षिणी राजस्थान - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियां शामिल होती हैं

(द) दक्षिण पूर्वी राजस्थान - इसमें चंबल, कुंनु, पार्वती काली सिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेंज, गंभीरी, छोटी काली सिंध, ढीला, खारी, माशी, काली सिल आदि नदियां शामिल होती हैं।

I. अपवाह के आधार पर वर्गी करण –

प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बांटा गया है

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

इस अपवाह तंत्र में निम्न प्रमुख नदियां शामिल होती है जैसे चंबल, बनास, काली सिंध, पार्वती, बाण गंगा, खारी, बेडच, गंभीरी आदि। ये नदियां अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है यह सभी नदियां अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी मेंले जाती हैं।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

इस अपवाह तंत्र में इन निम्न प्रमुख नदियां शामिल है जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, इत्यादि ।पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं, ये सभी नदियां अरबसागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स)अंतः प्रवाह वाली नदियां -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियां और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियां भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभाव होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियां कहा जाता है जैसे का कनी, कांतली, साबी घग्गर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है

- राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बार हमासी नहीं है
- राज्य में चूरू व बीकानेर ऐसे जिले हैं जहां कोई नदी नहीं है
- गंगानगर में यद्यपि पृथक से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्गर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है
- राज्य के 60% भूभाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सत ही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियां कोटा संभाग में बहती हैं

FREE SAMPLE

- राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।
- राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरागांधी नहर परियोजना को कहतेहैं
- रेगिस्तान की जीवन रेखा इंदिरागांधी नहर परियोजना को कहते हैं
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरागांधी नहर परियोजना को कहते हैं
- मारवाड़कीजीवनरेखालूनीनदीकोकहतेहैं
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद .....

FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 7

खनिज एवं ऊर्जा संसाधन

प्रिय छात्रों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान में पाए जाने वाले प्रमुख खनिज संसाधनों का अध्ययन करेंगे सबसे पहले हम समझते हैं कि खनिज संसाधन किसे कहते हैं।

खनिज -

खनिज या खनिज पदार्थ ऐसे भौतिक पदार्थ हैं जो खान से खोद कर निकाले जाते हैं । कुछ उपयोगी खनिज पदार्थों के नाम हैं – लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससेअलुमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तानव भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।

पृथ्वी की भूपर्पटी में पाई जाने वाली यौगिक जिन में धातुओं की मात्रा पाई जाती है वे खनिज कहलाते हैं।

ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उन से धातुओं कानिष्क र्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	**अयस्क**
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एलुमिनियम
गैलेना	शीशा
डोलोमाइट	कैल्शियम

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सिडेराइट	लोहा
मेलेकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिजः

लौहधातुः लौहअयस्क, मैंगनीज, निकेल, कोबाल्ट, आदि।

अलौहधातुः तांबा, लेड, टिन, बॉक्साइट, आदि।

बहुमूल्य खनिजः सोना, चाँदी, प्लैटिनम, आदि।

अधात्विक खनिजः

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूनापत्थर, संगमरमर, बलुआपत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिजः कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडारः

आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं। जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में हो ती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

होता है । पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं । उदाहरण: टिन, जस्ता, लेड, आदि।

अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टा नोंमें खनिज परतों में पाये जाते है । उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवणऔर सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है । बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में: - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाये जाते हैं और जमा होते हैं । इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाये जाते हैं । ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनकाअपरदन जल द्वारा नहीं होता है । उदाहरण: सोना, चाँदी, टिन, प्लैटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाये जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है । लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीननि काला जाता है।

राजस्थान में खनिज संसाधन

प्रिय छात्रों राजस्थान में कई प्रकार के खनिज पाए जाते हैं।

जैसा कि आपको पता है राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहां पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण .....

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 10

उद्योग एवं जनसंख्या

वर्तमान समय में चीन सूती वस्त्र के उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान रखता है ।

- सूती कपडों के लिए इंग्लैण्ड का मैनचेस्टर (Manchester) शहर प्रसिद्ध है ।
- शंघाई को चीन का मैनचेस्टर (Manchester) कहा जाता है ।
- जापान का मैनचेस्टर ओसाका को कहा जाता है ।
- भारत का मैनचेस्टर अहमदाबाद को कहा जाता है ।
- उत्तरी भारत का मैनचेस्टर कानपुर को कहा जाता है ।
- दक्षिण भारत का मैनचेस्टर कोयम्बटुर को कहा जाता है ।

राजस्थान का सूती वस्त्र उद्योग

- राजस्थान का मैनचेस्टर भीलवाड़ा को कहा जाता है ।
- नवीन मेनचेस्टर के नाम से भिवाड़ी (अलवर) को जाना जाता है । कलकत्ता मे भारत की प्रथम सूती मील 1818 में खोली गई ।
- राजस्थान का सबसे प्राचीन एवं सुसंगठित उद्योग सूती वस्त्र उद्योग है ।
- राजस्थान की प्रथम सूती वस्त्र मिल 'दी कृष्णा मिल्स लिमिटेड' की स्थापना 1889 में सेठ दामोदर दास राठी व श्याम जी कृष्ण वर्मा ने ब्यावर में की ।
- 'दी कृष्णा मील ब्यावर' कार्यशील हथकरघों की दृष्टि से सबसे बडी सूती वस्व मिल है ।
- राजस्थान में सबसे बडी सूती वस्व मील 'उम्मेद मिल्स' पाली मे है राजस्थान अपने वर्तमान स्वरूप में । नवम्बर 1956 को आया, इस समय राज्य में 7 सूती वस्त्र मिले थी।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- वर्तमान में राज्य में 23 सूती वस्त्र मिलें स्थापित है । राज्य में सूती मिलों को तीन भागों मे विभाजित किया गया है

<u>सार्वजनिक क्षेत्र की सूती मिलें</u>

- एडवर्ड मिल्स (ब्यावर)1906
- श्री महालक्ष्मी मिल्स (ब्यावर) 1925
- श्री विजय कॉटन मिल्स (विजयनगर)

सहकारी क्षेत्र की मिले

- राजस्थान सहकारी कताई मिल लिमिटेड गुलाबपुरा (भीलवाडा) ।
- श्री गंगानगर सहकारी कताई मिल लि.हनुमानगढ
- गंगापुर सहकारी कताई मिल लि. गगापुर (भीलवाड़ा) ।
- राजस्थान में निजी क्षेत्र में 17 मिलों की स्थापना की गई है । कंप्यूटर एडेड डिजाइन सैंटर भीलवाडा में स्थापित किया गया है

राजस्थान की प्रमुख सूती वस्त्र मिले

- एडवर्ड मिल्स लिमिटेड ब्यावर
- महालक्ष्मी मिल्स लिमिटेड ब्यावर
- मेवाड़ टैक्सटाईल मिल्स भीलवाड़ा
- महाराजा उम्मेद सिंह मिल्स लि. पाली
- सार्दूल टैक्सटाइल मिल्स लि. श्रीगंगानगर
- राजस्थान स्पिनिंग एण्ड जिनीविंग मिल्स भीलवाड़ा
- आदित्य मिल्स किशनगढ़
- उदयपुर कॉटन मिल्स उदयपुर

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- राजस्थान टैक्सटाइल मिल्स भवानी मण्डी
- गंगापुर को ऑपरेटिव स्पिनिंग मिल्स गंगापुर
- श्री गोयल इंडस्ट्रीज कोटा
- सुदर्शन टैक्सटाइल्स कोटा
- बांसवाड़ा सिन्थेटिक्स बासवाड़ा
- विजय कॉटन मिल्स विजयनगर
- बांसवाड़ा फेब्रिक्स बांसवाड़ा

चीनी उद्योग

- राजस्थान में सर्वप्रथम चीनी मील चितौडगढ जिले के भोपाल सागार नामक नगर में ' मेवाड़ शूगर मील ' के नाम से सन् 1932 मे निजी क्षेत्र में खोली गई । चीनी बनाने का दूसरा कारखाना सत् 1937 में गंगानगर मे गंगानगर शुगर मिल्स के नाम से प्रारंभ किया गया ।
- 1956 से 'गंगानगर शुगर मिल्स' सार्वजनिक क्षेत्र में आ गई है । चुकन्दर से चीनी बनाने के लिए श्रीगंगानगर शूगर मिल्स लिमिटेड में एक योजना 1968 में आरंभ की गई थी ।
- दी गंगानगर शूगर मील को वर्तमान में करणपुर के कमीनपुरा गाँव में स्थापित किया जाएगा । दी गंगानगर शूगर मिल्स शराब बनाने का कार्य भी करती हैं । अजमेर, अटरू (बांरा) प्रतापगढ तथा जोधपुर में भी इसके केन्द्र है ।रॉयल हेरिटेज लिकर, कैसर कस्तुरी ब्राण्ड गंगानगर शुगर मील की उच्च गुणवत्ता वाली शराब है ।

महत्वपूर्ण तथ्य

1965 में बूंदी जिले के केशोरायपाटन में चीनी मील सहकारी क्षेत्र में स्थापित की गई । 1976 में उदयपुर में चीनी मील निजी क्षेत्र में स्थापित की गई चीनी उद्योग के उत्पादन

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

व दक्षता में वृद्धि करने के उद्देश्य से विद्यमान कानूनों में परिवर्तन का सुझाव देने के लिए V C. महाजन समिति का गठन किया गया ।

सीमेंट उद्योग (Rajasthan me Cement Udyog)

- सीमेंट उत्पादन की दृष्टि से राजस्थान, भारत का एक अग्रणी राज्य है । राज्य में चितौडगढ जिला सीमेंट उद्योग के लिए सबसे अनुकूल जिला है । 1904 में सर्वप्रथम समुद्री सीपियों से सीमेंट बनाने का प्रयास मद्रास (चैन्नई) में किया गया था ।
- राज्य में सर्वप्रथम क्लीक निकसन् कम्पनी द्वारा 1915 में लाखेरी, बूंदी में सीमेंट संयंत्र स्थापित किया गया ।
- दक्षिण एशिया का सबसे बडा सीमेंट कारखाना ' जयपुर उद्योग लि . सवाई माधोपुर में स्थापित किया गया हैं, जो वर्तमान में बंद है । J.K. सीमेंट निम्बाहेड़ा का कारखाना सर्वाधिक सीमेंट का कारखाना है ।सबसे कम उत्पादन क्षमता वाला श्रीराम सीमेंट, श्री रामनगर कोटा का कारखाना है ।

सीमेंट की " श्री सीमेंट कम्पनी ' जो की 'ब्यावर में.....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 12

○ राजस्थान में वन संपदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य

प्रिय पाठकों इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान के वन संपदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य का अध्ययन करेंगे और समझेंगे की वन मानव जीवन के लिए किस प्रकार से उपयोगी है।

दोस्तों वन संपदा को' हरा सोना' एवं' मानव का सुरक्षा कवच' कहा जाता है।

वनमानवीय जीवन के लिए प्राचीन काल से आज तक

आर्थिक सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं।

वन संपदा,जीव–जंतु,मनुष्यआदि को आवास प्रदान करता है। इसी कारण कहा जा सकता है कि भौतिक भूगोल में वन संपदा महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है।

वनस्पति:-प्राकृतिक रूप से उगने वाले पेड़ पौधे जिसमें मानवीय हस्तक्षेपन हीं पाया जाता हो प्राकृतिक वनस्पति के नाम से जानी जाती है

वन विभाग : एक नजर में

प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल - 342239 वर्ग किमी.

प्रदेश का कुल वन क्षेत्र - 32845.30 वर्ग किमी.

कुल भौगोलिक क्षेत्र का प्रतिशत वन क्षेत्र - 9.597

प्रदेश का कुल वनावरण - 16630 वर्ग किमी.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

वृक्षावरण	-	8112 वर्ग किमी.
वनावरण एवं वृक्षावरण	-	24742 वर्ग किमी.
राज्य पशु	-	चिंकारा एवं ऊंट
राज्य पक्षी	-	गोडावण
राज्य वृक्ष	-	खेजड़ी
राज्य पुष्प	-	रोहिडा
राष्ट्रीय उद्यान	-	3
वन्यजीव अभ्यारण	-	27
बाघ परियोजनाएँ	-	3(रणथंबोर सरिस्का एवं मुकुंदरा हिल्स)
रामसर स्थल	-	2 (केवलादेव नेशनल पाक एवं सांभर झील)
संरक्षित क्षेत्र (कंजर्वेशन रिजर्व)	-	14
कुल प्रादेशिक मंडल	-	38
वन्यजीव मंडल	-	16

भारत में सर्वप्रथम वन नीति 1894 को लागू की गई एवं स्वतंत्रता के बाद प्रथम वन नीति 1952 को लागू की गई।

इस 1952 की वन नीति में संशोधन कर के 1988 में राष्ट्रीय वन नीति घोषित की गई । जिसके अनुसार 33. 33% भू-भाग पर वन होना अनिवार्य है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

1910 में जोधपुर रियासत के द्वारा वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून बनाए एवं 1953 में राजस्थान सरकार के द्वारा वन अधिनिय म को लागू किया गया।

1953 में जब वन अधिनियम को लागू किया गया उस समय राज्य के कुल 13% भाग पर वन थे।

राजस्थान सरकार के द्वारा राज्य की प्रथम वन नीति 2010 को लागू की गई।

वर्तमान समय में राजस्थान के कुल 9.57% (32736.64वर्ग किलोमीटर) क्षेत्र पर वन पाए जाते हैं जो कि देश के कुल वन क्षेत्र का 4.25% है।

वनों की दृष्टि से देश में राजस्थान का स्थान 9वा है।

राजस्थान में सबसे अधिक वन उदयपुर (क्षेत्रफल के हिसाब से) जिनमें से सबसे कम चूरु जिले में पाए जाते हैं जबकि भारत में सबसे अधिक .....

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

राजस्थान इतिहास के स्त्रोत

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ -

अशोक के अभिलेख : -

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख सेअशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती हैं।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख : -

- यह राजस्थान का सबसे प्राचीनतम अभिलेख है। 443 ई.पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के मिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ। वर्तमान में यह अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.): -

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ सिरोही से प्राप्त हुआ है। इससे अर्बुदांचल के राजा रजिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है। इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।

FREE SAMPLE

- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।

  इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।

मानमोरी का अभिलेख : -

- 713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख में इसके रचयिता पुष्य तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।
- इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांगद के बारे में जानकारी मिलती है।

  राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।
- यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड ने इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया था।

इस अभिलेख में अमृत मंथन का उल्लेख मिलता है।

इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों (महेश्वर, भीम, भोज एवं मान) के बारे में जानकारी मिलती है।

मण्डोर अभिलेख : -

जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासकों की वंशावली तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।

प्रतापगढ़ अभिलेख (946 ई.): -

प्रतापगढ़ में स्थित इस अभिलेख में गुर्जर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

बड़वा अभिलेख : -

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मोखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मोखरी शासकों बल,सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।

कणसवा का अभिलेख : -

738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।

आदिवराह मन्दिर का अभिलेख :

९५५ ई.का यह अभिलेख उदयपुर के आदिवराह मन्दिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण है।

यह अभिलेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।

इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक चाचिंगदेव के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) : -

यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।

इस अभिलेख में बापा से महाराणा समरसिंह तक की वंशावली का उल्लेख है।

इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेखहै।

किराडू का लेख : -

FREE SAMPLE

।।6। ई. का यह लेख किराडू के शिव मन्दिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।
इस लेख में परमारों की उत्पत्ति वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।
इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।

<u>सांडेराव का लेख : -</u>

।।64 ई.का यह लेख देसूरी के पास सांडेराव के महावीर जैन मंदिर में उत्कीर्ण है।
यह लेख कल्हणदेव के समय का है जिसमें उसके परिवार द्वारा मंदिर के लिए दिये गए दान का उल्लेख मिलता है।
इस लेख में उस समय के विभिन्न करों के बारे में जानकारी मिलती है।

<u>श्रृंगी ऋषि का लेख :</u>

।428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार कवि योगेश्वर .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट *– प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	

FREE SAMPLE

U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 I[st] शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (I[st] शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

अध्याय – 3

राजस्थान के प्रमुख राजवंशों का इतिहास

- **गुर्जर प्रतिहार वंश**

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।। वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के बौक शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6 वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली महाभारत शैली/गुर्जर-प्रतिहार शैली प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में गुर्जर-प्रतिहार के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था । गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार गुर्जर प्रतिहार कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी भीनमाल (जालौर) थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' का सर्वप्रथम उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डोर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत सी-यू-की में कु-चे-लो (गुर्जर) देश का उल्लेख करता है ।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- जिसकी राजधानी पि-लो-मो-लो (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को 'जुर्ज' भी कहा है ।
- अल मसूदी प्रतिहारों को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को 'बोरा' कहकर पुकारता है । भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुजर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है ।डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते है। जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को ईरानी मूल के बताते है ।
- मिस्टर जैक्सन ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था कनिघंम ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है ।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई ।

मुहणौत नैणसी (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमे से दो प्रमुख थी - मण्डोर व भीनमाल।

गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर) :-

संस्थापक - नागभट्ट प्रथम ।

रघुवंशी प्रतिहारों ने चावडों से प्राचीन गुर्जर देश छीन लिया और अपनी राजधानी भीनमाल को बनाया । भीनमाल शाखा के प्रतिहारों के उत्पति के विषय में जानकारी ग्वालियर प्रशस्ति से मिलती है। जो प्रतिहार शासक भोज प्रथम के समय उत्कीर्ण हुई ।

प्रसिद्ध कवि राजशेखर के ग्रंथों से भी भीनमाल के प्रतिहारों की जानकारी मिलती है ।

अवन्ति/उज्जैन शाखा

नागभट्ट प्रथम के समय दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित ।

कन्नौज शाखा : -

नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया ।

कवि वृष की उपाधि मुंज राजा को दी गई थी ।

आभानेरी तथा राजौरगढ़ के कलात्मक वैभव गुर्जर प्रतिहार काल के है ।

गुर्जरों तथा अन्य पिछड़ी जातियों (एस बी सी) के लिए राजस्थान सरकार ने 2015 मे 5 प्रतिशत कोटे की व्यवस्था की ।

मण्डोर शाखा (जोधपुर) :-

संस्थापक - रज्जिल

गुर्जर प्रतिहारों की प्रारंभिक राजधानी मण्डोर थी ।गुर्जर प्रतिहारों की इन शाखाओं में सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण मण्डोर के प्रतिहार थे । मंडोर के प्रतिहार क्षत्रीय माने जाते है ।

हरिशचंद्र :-

हरिशचंद्र को प्रतिहार वंश का संस्थापक माना जाता है । हरिशचंद्र को प्रतिहारों का गुरु/गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष/ गुर्जर प्रतिहारों का मूल पुरुष कहते है ।

हरिश्चंद्र की दो पत्नियों में से एक ब्राह्मण तथा दूसरी क्षत्रिय पत्नी थी । क्षत्रिय पत्नी का नाम भद्रा थी ।

इसकी क्षत्रिय पत्नी के चार पुत्र हुए जिनके नाम भोगभट्ट, कक्कक, रज्जिल और दह थे ।

रज्जिल :-

FREE SAMPLE

गुर्जर प्रतिहार राजवंश के आदिपुरुष हरिशचंद्र थे, तो मण्डोर के गुर्जर प्रतिहार राजवंश के संस्थापक रज्जिल थे ।

रज्जिल ने मण्डोर को जीतकर अपने राज्य की राजधानी बनाया

नरभट्ट :-

चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नरभट्ट का उल्लेख 'पेल्लोपेल्ली' नाम से किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ साहसिक कार्य करने वाला होता है ।

नागभट्ट प्रथम (780-750 ई.)

नागभट्ट प्रथम को 'नागवलोक' तथा इसके दरबार को (नागवलोक) दरबार कहा जाता था ।

नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार साम्राज्य का संस्थापक कहा जाता है ।

इसकी जानकारी हमें पुलिकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख से प्राप्त होती है ।

नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को चावडों से जीता तथा 730 ई. में भीनमाल की राजधानी बनाया । इसने भीनमाल में प्रतिहारवंश की स्थापना की । नागभट्ट प्रथम ने आबू, जालौर आदि को जीतकर उज्जैन (अवन्तिका) को अपनी दूसरी राजधानी बनाया ।

नागभट्ट प्रथम के समय सभी राजपूतवंश गुहिल, चौहान, परमार, राठौर, चंदेल, चालुक्य इसके सामंत के रूप में कार्य करते थे ।

ग्वालियर अभिलेख के अनुसार नागभट्ट प्रथम ने म्लेच्छ (अरबी) सेना को पराजित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया ।

नागभट्ट प्रथम का समकालीन अरब शासक जुनैद था । इसकी पुष्टि अल बिलादुरी के विवरण से होती है ।

हांसोट अभिलेखानुसार समकालीन अरब शासक जुनैद के नियंत्रण से भड़ोच छीन कर नागभट्ट प्रथम ने चाहमान भतृवडढ को शासक नियुक्त किया ।

वत्सराज (780 -795 ई.)

वत्सराज देवराज व भूयिकादेवी का पुत्र था ।

वत्सराज भीनमाल में गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा जाता है ।

Vatsaraj ने कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की, जो 150 वर्ष तक चला ।

150 वर्ष का त्रिपक्षीय संघर्ष कन्नौज को लेकर हुआ।

यह संघर्ष 8वीं सदी में प्रारंभ हुआ ।

उत्तर भारत के गुर्जर प्रतिहार, दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट वंश, पूर्व में बंगाल के पालवंश के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ । इस संघर्ष में गुर्जर प्रतिहार विजयी हुए । परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट राजा ध्रुव से हारा था ।

कन्नौज को कुश स्थल व महोदय नगर के नाम से जाना जाता था । कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत गुर्जर-प्रतिहार शासक वत्सराज के समय हुई ।

सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु (647 ई.) के बाद उत्तरी भारत की राजनीति की धुरी कन्नौज पर अधिकार करने हेतु संघर्ष प्रारंभ हुआ ।

<u>त्रिपक्षीय संघर्ष के परिणाम : -</u>

कन्नौज पर (725 ई.- 752 ई.) यशोवर्धन नामक शासक की मृत्यु के बाद तीन महाशक्तियों में संघर्ष प्रारंभ हुआ जो त्रिपक्षीय संघर्ष कहलाता है । ये तीन शक्तियाँ

1. उत्तरी भारत के गुर्जर प्रतिहार
2. पूर्व के पाल (बंगाल के)
3. दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट

त्रिपक्षीय संघर्ष के समय कन्नौज पर शक्तिहीन आयुधवंश (इन्द्रायुध, चक्रायुध) के शासकों का शासन था ।

त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत आठवीं शताब्दी ईस्वी में हुई । त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रारंभ प्रतिहारवंश ने किया और इसका अंत भी प्रतिहारवंश ने ही किया ।

त्रिपक्षीय संघर्ष का प्रथम चरण गुर्जर-प्रतिहार वत्सराज , बंगाल के पाल शासक धर्मपाल व दक्षिण के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के बीच हुआ ।

FREE SAMPLE

वत्सराज ने कन्नौज पर शासित इन्द्रायुध को हराया व उसने पाल शासक धर्मपाल को मुंगेर (मुदगगिरी) के युध्द में पराजित किया । किन्तु राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से पराजित हुआ ।

वत्सराज को रणहस्तिन (युद्ध का हाथी) की उपाधि प्राप्त थी । वत्सराज के समय 778 ई. में उद्योतन सूरी द्वारा 'कुवलय माला ग्रंथ' की .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

- **मारवाड़ का इतिहास**

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तरी पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश कि स्थापना इस भाग में हुई तथा मारवाड़ कि संकटकालीन राजधानी ' शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
3- किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

राठौड़ शब्द की व्युत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।

पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं ।

राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।

डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया हैं ।

डा. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना हैं ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

मारवाड़ के राठौड़ वंश के संस्थापक, तथा मारवाड़ के राठौड़ों का संस्थापक या आदि पुरुष भी कहा जाता है ।

राव सीहां कुंवर 'सेतराम' का पुत्र था उसकी रानी सोलंकी वंश की 'पार्वति थी ।

13 वीं शताब्दी में जब तुर्कों ने कन्नौज को आक्रमण कर बरबाद कर दिया तो राव सीहा मारवाड़ चला आया ।

राव सीहा ने सर्वप्रथम पाली (वर्तमान) के निकट अपना साम्राज्य स्थापित किया ऐसा कहते हैं कि उन्होनें पाली के पालीवाल ब्राह्माणों को मेर व मीणाओं के अत्याचार से मुक्ति दिलाई उनकी रक्षा की तथा उसके पश्चात् उनके आग्रह पर वहीं आकर बस गया ।

पाली के समीप बीठू गाँव के देवल के लेख से सीहा की मृत्यु की तिथि 1273 ई. निश्चित होती है ।इस लेख के अनुसार सीहा सेतकुँवर का पुत्र था । उसकी पत्नी पार्वती ने उसकी मृत्यु पर इस देवल का निर्माण करवाया था ।इस लेख के अनुसार सीहा की मृत्यु बीठू गांव (पाली) में मुसलमानों से गायों कि रक्षा करते हुए युद्ध के दौरान हुई थी । इस लेख पर अश्वारोही सीहा को शत्रु पर भाला मारते हुए दिखाया गया है । इस लेख से प्रमाणित होता है कि इस समय राठौड़ों का राज्य विस्तार पाली के आस - पास ही सीमित था ।

राव सीहा के पश्चात् उनका पुत्र आस्थान गद्दी पर बैठा ।

आस्थान (1273 – 1291)

सीहा के बाद आस्थान राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोज को केन्द्र बनाया । 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आस्थान वीरगति को प्राप्त हुआ

आस्थान के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।

राठौड़ राजवंश की कुलदेवी चक्रेश्वरी, राठेश्वरी, नागणेची या नागणेचिया के नाम से प्र सिद्ध है ।

इनके छोटे भाई का नाम धांधल था। ये लोकदेवता पाबू जी के पिता थे ।

राव चूड़ा (1383 – 1423)

राव चूडा विरमदेव का पुत्र था ।

राव चूड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दिया था ।

उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डोर जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।

चूड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।

इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।

उसने जलाल खां खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।

परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगलप्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूड़ा मारा गया ।

राव चूड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया ।

उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँदबावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद लोकदेवता इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी ।

मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

FREE SAMPLE

भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।

कान्हा (1423–1427)

चूड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।

1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डोर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डोर का शासक था।

ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा कि मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूडा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कवर से हुआ था ।

परंतु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा)की शरण में चला गया ।

राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।

रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परंतु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।

रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।

रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का साथ मेवाड़ के मोकल (भॉजा) ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।

FREE SAMPLE

मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वहीं राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया ।
4. राव जोधा ने सन् 1453 में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया ।
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया ।
7. दुर्ग के निर्माण के पश्चात् राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर को स्थानांतरित की ।
8. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है । इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा । यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

FREE SAMPLE

- **महाराजा जसवंत सिंह 1638 – 1678**

जसवंत सिंह गजसिंह का बड़ा पुत्र था।

जसवन्तसिंह का राज्याभिषेक 1638 ई. में आगरा में हुआ। उस समय जसवंत सिंह का संरक्षक ठाकुर राजसिंह कूम्पावत था।

जसंवत सिंह शाहजहाँ का सूबेदार था।

बादशाह शाहजहाँ ने उसे 'महाराजा' की उपाधि प्रदान की।

जोधपुर तथा जैसलमेर के मध्य पोकरण को लेकर जो विवाद था उसका सुलझवाड़ा भी शाहजहाँ ने ही कराया था।

मुगल उत्तराधिकारी संघर्ष-शाहजहाँ के पुत्रों के मध्य हुए उत्तराधिकारी संघर्ष में जसवन्तसिंह ने दाराशिकोह का साथ दिया था।

धरमत (उज्जैन) का युद्ध (15 अप्रेल, 1658 ई.)

उत्राधिकार को लेकर शाहजहाँ के पुत्रा में युद्ध हुआ इस युद्ध में जसवंत सिंह ने धाराशिकोह का साथ दिया क्योंकि शाहजहाँ चाहता था कि धाराशिकोह ही उसका उत्तराधिकारी बने ।

इस युद्ध में केन्द्रीय सेना का नेतृत्व महाराजा जसवन्तसिंह और कासिम खाँ ने किया परन्तु औरंगजेब ने इस सेना को पराजित कर दिया ।

धरमत के युद्ध में पराजय के बाद जसवन्तसिंह जोधपुर आया तो उसकी हाड़ी रानी जसवन्तदे (वृन्दी के शत्रुशाल हाड़ा की पुत्री) ने किले के द्वार बंद करवा दिये थे ।

बर्नुआ (इलाहाबाद) का युद्ध (5 जनवरी, 1659 ई.) :-

इस युद्ध में जसवन्तसिंह औरंगजेब की ओर से शामिल हुआ परन्तु युद्ध के दौरान शुजा से मिल गया तथा पराजित हुआ ।

दोराई का युद्ध

उत्तराधिकार को लेकर धाराशिकोह व औरंगजेब कि सेना के मध्य यह द्वितीय युद्ध था जो कि 1659 ई. में अजमेर के निकट दौराई नामक स्थान पर हुआ । इस युद्ध में भी औरंगजेब कि विजय हुई, तथा वह बादशाह बना और जसवंत सिंह ने भी उसकी बादशाहत स्वीकार कि तथा धाराशिकोह को कैद करके अलवर के कांकनवाड़ी किले में कैद कर दिया गया ।

जसवंत सिंह और दक्षिण भारत के सैन्य अभियान

धाराशिकोह का साथ देने के कारण औरंगजेब जसवतं सिंह से पहले ही नाराज था तथा उसने उसको दक्षिण भारत मे मराठा शिवाजी का पराजित करने के लिए भेजा । परतु जसंवत सिंह असफल रहा वह शिवाजी के विद्रोह को दबा न सका ।

जसवंत सिंह ने औरंगाबाद के निकट एक नया नगर बसाया जिसे जसवंतपुरा नाम दिया गया ।

जसवन्त सिंह की उपलब्धियाँ

FREE SAMPLE

शाहजहाँ ने जसवन्तसिंह को 7000 का मनसब दिया था जिसे औरंगजेब ने भी बहाल रखा/ बादशाह औरंगजेब ने महाराजा जसवन्तसिंह को निम्न प्रान्तों की सूबेदारी पर नियुक्त किया था ।

1. गुजरात (1659 ई.)
2. दक्षिण (1662 ई.)
3. काबुल (1673 ई.)

काबुल की सूबेदारी के दौरान ही 28 नवम्बर, 1678 ई. को जसवतं सिंह कि मृत्यु अफगानिस्तान मे पिण्डारियों के खिलाफ सैन्य अभियान के दौरान जमरूद नामक स्थान पर हुई ।

जसवन्तसिंह की मृत्य पर औरंगजेब ने कहा कि 'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया ।'

जसवन्तसिंह की रचनाएँ

- भाषा भूषण
- अपरोक्ष सिद्धान्तसार
- प्रबोध चन्द्रोदय

जसवन्तसिंह के दरबारी विद्वान

- दलपत मिश्र जसवन्तविलास
- नरहरिदास अवतारचरित्र
- रामचरित्र कथा

निर्माण कार्य

1. **जानसागर**- जसवन्तसिंह की रानी अतिरंगदे ने जोधपुर में जानसागर तालाब बनवाया जिसे शेखावतजी का तालाब भी कहते हैं ।

2. **कल्याणसागर**-कल्याणसागर तालाब का निर्माण रानी जसवन्तदेने जोधपुर में करवाया था, इसे रतनाड़ा भी कहा जाता हैं ।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

3. **राई का बाग**- जोधपुर में स्थित 'राई का बाग' का निर्माण जसवन्तदे ने 1663 ई. में करवाया था।

4. जसवन्तपुरा महाराजा जसवन्तसिंह ने औरंगाबाद के समीप जसवन्तपुरा कस्बा बसाया तथा यहाँ जसवन्तसागर तालाब बनवाया ।

5. महाराजा जसवन्तसिंह ने काबुल से अनार के बीज लाकर जोधपुर के कागा के बाग में लगवाये थे। माना जाता है कि इसीलिए जोधपुर के अनार अपनी मिठास के लिए प्रसिद्ध हैं ।

मुहणोत नैणसी (1610-1670 ई.)

राजस्थान के क्रमबद्ध इतिहास लेखन के प्रथम इतिहासकार नैणसी का जन्म 1610 ई. में मारवाड़ में हुआ था ।

1658 ई. में नैणसी महाराजा जसवन्तसिंह के दीवान नियुक्त हुए, परन्तु 1667 ई. में इन पर राजकीय धन के गबन का आरोप लगाकर बन्दी बना लिया गया ।

बन्दी अवस्था में जब नैणसी को औरंगाबाद से मारवाड़ लाया जा रहा था, तो फुलसरी ग्राम (महाराष्ट्र) में 1670 ई. में नैणसी ने आत्महत्या .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 6

जनजाति व किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आंदोलन-

बिजौलिया किसान आंदोलन (बिजौलिया किसान आंदोलन हिंदी में):- बिजौलिया किसान आंदोलन राजस्थान से शुरू होकर पुरे देश में फैलने वाला एक संगठित किसान आंदोलन था। बिजौलिया किसान आंदोलन इतिहास का सबसे लंबा चला अहिंसक किसान आंदोलन था, जो कि करीब ५५ साल तक चला ।

बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897-1941 55 वर्षों तक) -

जिला भीलवाड़ा

बिजौलिया का प्राचीन नाम विजयावल्ली

संस्थापक अशोक परमार

बिजोलिया, मेवाड़ रियासत का ठिकाना था।

कारण

1. लगान की दरें अधिक थी।
2. लाग-बाग कई. तरह के थे।
3. बेगार प्रथा का प्रचलन था।

बिजौलिया किसानों से 84 प्रकार का लाग-बाग (टेक्स) वसुल किया जा जाता था।

बिजौलिया के किसान धाकड़ जाति के लोग अधिक थे।

बिजौलिया किसान आन्दोलन तीन चरणों में पुरा हुआ था।

1. 1897 से 1916 नेतृत्व -साधु सीताराम दास
2. 1916 से 1923 नेतृत्व - विजयसिंह पथिक

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

3. 1923 से 1941 नेतृत्व - माणिक्यलाल वर्मा,
हरिभाऊ उपाध्याय जमनालाल बजाज,
रामनारायण चौधरी

<u>प्रथम चरण (1897 से 1916 तक) से</u>

- 1897 में बिजौलिया के किसान राम धाकड़ के मृत्युभोज के अवसर पर गिरधारीपूरा गांव से एकत्रित होते और ठिकानेंदार की शिकायत मेवाड़ के महाराणा से करने का निश्चिय करते हैं। और नानजी पटेल व ठाकरी पटेल को उदयपुर भेजा जाता है जहाँ मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने कोईभी कार्यवाही नहीं की। इस समय बिजौलिया के ठिकानेंदार रावकृष्ण सिंह ने 1903 में किसानों पर चंवरी कर लगाया।
- चंवरी कर एक विवाह कर था इसकी दर 5 रूपये थी। 1906 में कृष्णसिंह मर गया और नये ठिकानेंदार राव पृथ्वीसिंह बने जिन्होंने तलवार बंधाई. कर (उत्तराधिकारी शुल्क किसानों पर लागु कर दिया।
- 1915 में पृथ्वी सिंह ने साधु सीताराम दास व इसके सहयोगी फतहकरण चारण व ब्रह्मदेव को बिजौलिया से निष्कासित कर दिया।

<u>द्वितीय चरण (1916 से 1923 तक)</u>

- 1917 में विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल पंचबोर्ड (ऊपरमाल पंचायत) का गठन मन्ना पटेल की अध्यक्षता में किया। बिजौलिया किसान आन्दोलन को लोकप्रिय व प्रचलित करने वाले समाचार पत्र प्रताप 2. ऊपरमाल डंका थे।
- 1919 में बिन्द्रलाल भट्टाचार्य आयोग को बिजौलिया किसान आन्दोलन की जांच के लिए भेजा जाता है। इस आयोग ने लगान की दरें कम करने तथा लाग-बागों को हटाने की सिफारिश की किन्तु मेवाड़ के महाराणा ने इसकी कोईभी सिफारिश स्वीकार नहीं की।
- 1922 में राजपुताना का ए.जी. जी. रॉबर्ट हॉलेण्ड बिजौलिया आते हैं और किसानों और ठिकानेंदार के मध्य समझौता करवाते हैं यह समझोता स्थाई. सिद्ध नहीं हुआ।

FREE SAMPLE

- 1923 में विजय सिंह पथिक को गिरफ्तार कर लिया जाता है और 6 वर्ष की सजा सुना देते हैं।

तृतीय चरण (1923 से 1941)

- 1941 में मेवाड़ के प्रधानमंत्री सर टी. विजयराघवाचार्य थे इन्होनें अपने राजस्व मंत्री डॉ. मोहन सिंह मेहता को बिजौलिया भेजा इसने ठिकानेदार व किसानों के मध्य समझौता किया लगान की दरे कम कर दिया, अनेक लगान हटा दिये और बेगार प्रथा को समाप्त कर दिया।
- यह किसान आन्दोलन सफलता पूर्वक समाप्त होता है।
- इस किसान आन्दोलन में दो महिलाओं रानी भीलनी व उदी मालन ने भाग लिया।
- किसान आन्दोलन के समय माणिक्यलाल वर्मा ने पछिड़ा गीत लिखा
- बेगूं (चित्तौड़गढ़) किसान आंदोलन । बेगूं किसान आंदोलन
- बेगूं (चित्तौड़गढ़) मेवाड़ राज्य का ठिकाना था।
- बेगूं के किसानों ने अपने यहां लाग-बाग, बेगार और ऊँचे लगान के विरुद्ध 1921 ई. में मेनाल (भीलवाड़ा) नामक स्थान पर आन्दोलन शुरू किया।
- इसका नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया।
- 1922 में मंडावरी में किसान आंदोलन को गोलियों की बौछार से तितर-बितर किया गया। यहाँ सिपाहियों की गोलियों का शिकार खुद एक सिपाही फेज खां हुआ।
- किसानों के विरोध के आगे ठाकुर अनूप सिंह को झुकना पड़ा और राजस्थान सेवा संघ और अनूप सिंह के बीच समझौता हो गया।
- मेवाड़ सरकार ने इस समझौते को बोल्शेविक सन्धि कहकर अनूपसिंह को उदयपुर में नजरबंद कर दिया।
- 13 जुलाई., 1923 को गोविन्दपुरा में किसान सम्मेलन पर सरकार ने गोलियां चलवायी जिसमें रूपाजी व कृपाजी नामक किसान मारे गये।
- बेगूं में किसानों की शिकायतों की जाँच हेतु सरकार ने बंदोबस्त आयुक्त श्री ट्रेन्च की अध्यक्षता में आयोग का गठन किया।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- सेटलमेन्ट कमिश्नर टेन्च की दमनकारी कार्यवाही से विजयसिंह पथिक पकड़े गये तथा उन्हें 3.5 वर्ष कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी।

बूंदी का किसान आंदोलन

राजस्थान में भूमि बंदोबस्त व्यवस्था के बावजूद भी गावों में धीरे-धीरे महाजनों का वर्चस्व बढ़ने लगा । 'साद' प्रथा के अंतर्गत प्रत्येक क्षेत्र में महाजन से लगान की अदायगी का आश्वासन् लिया जाने लगा। इस व्यवस्था से किसान अधिकाधिक रूप से महाजनों पर आश्रित होने लगे तथा उनके चंगुल में फंसने लगे। 19 वीं सदी के अंत में व 20 वीं सदी के शुरू में जागीरदारों द्वारा किसानों पर नए-नए कर लगाये जाने लगे और उनसे बड़ी धनराशि एकत्रित की जाने लगी। जागीरदारी व्यवस्था शोषणात्मक हो गई.। किसानों से अनेक करों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के लाग-बाग लेने की प्रथा भी प्रारंभ हो गई.। ये लागें दो प्रकार की थी :-

1. स्थाई लाग
2. अस्थाई लाग (इन्हें कभी-कभी लिया जाता था।)

इस कारण से जागीर क्षेत्र में किसानों की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई जिसके कारण किसानों में रोष उत्पन्न हुआ तथा वे आंदोलन करने को उतारू हो गए ।

- बिजोलिया, बेगूं और अन्य क्षेत्र के किसानों के समान ही बूंदी राज्य के किसानों को भी अनेक प्रकार की लागतों (लगभग 25%), बेगार एवं ऊँची दरों पर लगान की रकम देनी पड़ रही थी।
- बूंदी राज्य में वसूले जा रहे कई करों के अलावा । रुपये पर । आने की दर से स्थाई रूप से युद्धकोष के लिए धनराशि ली जाने लगी। किसानों के लिए यह अतिरिक्त भार असहनीय था। किसान राजकीय अत्याचारों से परेशान होने लगे।

मेवाड़ राज्य के बिजौलिया में किसान आन्दोलन की कहानियां पूरे राजस्थान में व्याप्त हुई। अप्रेल 1922 में बिजौलिया की सीमा से जुड़े बूंदी राज्य के 'बराड़' क्षेत्र के त्रस्त किसानों ने आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। इसीलिए इस आंदोलन को .....

FREE SAMPLE

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

अध्याय – 8

राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

राजस्थान इतिहास की प्रसिद्ध महिला व्यक्तित्व

अंजना देवी चौधरी

अंजना देवी अग्रवाल का जन्म सीकर जिले के श्रीमाधोपुर में हुआ। राजस्थान सेवा संघ के कार्यकर्ता रामनारायण चौधरी से इनका विवाह हुआ। अंजना देवी ने बिजौलिया तथा बेगूं किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया। 1921-24 में मेवाड़, बूंदी राज्यों की स्त्रियों में राष्ट्रीयता, समाज सुधार की भावना को बढ़ावा दिया। 1924 ई. में बिजौलिया में लगभग 500 स्त्रियों के जत्थे का नेतृत्व करके नाजायज हिरासत से किसानों को छुड़या ये समस्त रियासती जनता में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला थी। इन्हें बूंदी राज्य से निर्वासित भी होना पड़ा। 1934-36 ई. तक अजमेर के नारोली आश्रम में रह कर हरिजन सेवा कार्यों में भाग लिया।

रतन शास्त्री

रतन व्यास का जन्म खाचरोद, मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह हीरालाल शास्त्री से हुआ। रतन शास्त्री ने सन् 1939 ई. में जयपुर राज्य प्रजामण्डल के सत्याग्रह आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया और सन् 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में भूमिगत कार्यकत्र्ताओं और उनके परिवारों की सेवा की। सन् 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1975 ई. में पद्म विभुषण से सम्मानित राजस्थान की प्रथम महिला बनी।

FREE SAMPLE

नगेन्द्रबाला

नगेन्द्रबाता केसरीसिंह बारहठ की पोत्री थी। 1941-1947 ई. तक किसान आंदोलन में सक्रिय रही। स्वतंत्रता के पश्चात् ये कोटा की जिला प्रमुख रहीं। इन्हें राजस्थान की प्रथम महिला जिला प्रमुख होने का गौरव प्राप्त है। ये राजस्थान विधानसभा की सदस्य भी रही हैं।

जानकी देवी बजाज

जानकी देवी का जन्म मध्यप्रदेश के जावरा कस्बे में हुआ। इनका विवाह जमनालाल बजाज के साथ हुआ और इन्हें वर्धा में आना पड़ा। बजाज जी के देहान्त के बद इनको गौसेवा संघ की अध्यक्षा बनाया गया। ये जयपुर प्रजामण्डल के 1944 ई. के अधिवेशन की अध्यक्षा चुनी गई। विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के दौरान 108 कुओं का निर्माण करवाया। 1956 ई. में सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' से सम्मानित किया।

नारायणी देवी वर्मा

नारायणी देवी का जन्म सिंगोली मध्य प्रदेश में हुआ। इनका विवाह श्री माणिक्यलाल वर्मा से हुआ। बिजौलिया किसान आन्दोलन के समय इन्हें कुम्भलगढ़ के किले में बन्दी बना लिया गया। नवम्बर 1944 ई. में महिला शिक्षा तथा जागृति के लिए भीलवाड़ा में महिला आश्रम नाम की संस्था स्थापित कर महिलाओं के सर्वांगीण विकास का कार्य अपने हाथ में लिया। 1970 में राज्यसभा से निर्वाचित किया गया।

शांता त्रिवेदी

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

शांता देवी जन्म नागपुर महाराष्ट्र में हुआ। इनका विवाह उदयपुर के परसराम त्रिवेदी के साथ हुआ। शांता त्रिवेदी ने 1947 ई. में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की।

मिस लुटर

मिस लूटर का पूरा नाम लिलियन गोडाफ्रेडा डामीथ्रोन लूटर था। इनका जन्म क्यामो, बर्मा में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय ये भारत आ गयी। उन्हीं दिनों जयपुर की महारानी गायत्री देवी ने राजपूत घराने की लड़कियों की शिक्षा के लिए एक स्कूल शुरू किया। मिस लूटर को 1934 ई. में महारानी गायत्री देवी स्कूल में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया। वे जीवन पर्यनत इस पद पर रही। महिला जगत में शिक्षा के प्रसार के लिए भारत सरकार ने 1970 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। 1976 ई. में ब्रिटिश सरकार ने भी महिला शिक्षा के लिए सम्मानित किया।

कालीबाई

डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव की भील कन्या कालीबाई अपने शिक्षक सेंगाभाई को बचाने के प्रयास में पुलिस द्वारा गोलियों से छलनी कर दी गई। इनकी मृत्यु 20 जून, 1947 हुई। रास्तापाल में इनकी स्मृति में एक स्मारक बना हुआ है।

किशोरी देवी

महिलाओं के प्रति अमानवीय व्यवहार करने वालों के विरोध में सीकर जिले के कटराथल नामक स्थान पर किशोरी देवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन 1934 ई. में

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

आयोजित किया गया। जिसमें क्षेत्र की लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। किशोरी देवी स्वतंत्रता सेनानी सरदार हरलाल सिंह खर्रा की पत्नी थी।

श्रीमती सत्यभामा

बूंदी के स्वतंत्रता सेनानी नित्यानन्द नागर की पुत्रवधू सत्यभामा ने ब्यावर अजमेर आन्दोलन (1932 ई) का नेतृत्व किया। सत्यभामा को गांधी जी की मानस पुत्री के रूप में भी जाना जाता है।

कमला देवी

इनको राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार के रूप में जाना जाता है। इन्होंने ने अजमेर से प्रकाशित होने वाले प्रकाश पत्र से लेखन कार्य किया।

खेतूबाई

बीकानेर के स्वतंत्रता सेनानी वेद्य मधाराम की बहन, जिन्होंने दूधवा खारा किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व किया और आजीवन खादी धारण करने का प्रण लिया।

रमा देवी

इनका जन्म जयपुर में देख गंगासहाय के घर में हुआ। ये मात्र 11 वर्ष की आयु में विधवा हो गई। बाद में गांधी विचारधारा रखने वाले नेता तादूराम जोशी से पुनर्विवाह हुआ। विवाह के बाद इन्होंने खादी पहनना प्रारम्भ किया तथा नौकरी छोड़ पति के साथ राजस्थान सेवा

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संघ का कार्य किया। 1931 ई में बिजोतिया किसान आंदोलन में भाग लेने बिजौलिया गई जहां इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

लक्ष्मीदेवी आचार्य

कलकत्ता में स्थापित बीकानेर प्रजामण्डल की संस्थापक सदस्या और अध्यक्ष भी रही। सविनय अवज्ञा आन्दोलन और स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया।

पन्नाधाय

पन्ना मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह की धाय मां थी। मेवाड़ के सामन्त बनवीर ने महाराणा विक्रमादित्य की हत्या कर युवराज उदयसिंह की हत्या का भी प्रयास किया। पन्नधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान कर उदयसिंह को किले से बाहर भेजकर उसकी प्राण रक्षा की।

गोरां धाय

जोधपुर के अजीतसिंह को बचाने के लिए अपने पुत्र का बलिदान देने के कारण मारवाड़ की पन्ना धाय भी कहा जाता है।

हाड़ी रानी (सहल कंवर)

सलूम्बर (मेवाड़) के जागीरदार रतनसिंह चूंडावत की पत्नी जिसने अपना सिर काटकर निशानी के रूप में युद्ध में जाते हुए पति को दे दिया।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रानी पद्मिनी

रानी पद्मिनी चित्तौड़ की रानी थी, जिन्हें पद्मावति के नाम से जाना जाता है जिनके पति रतन सिंह थे। इनकी साहस और बलिदान .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

अध्याय – I

राजस्थान की विरासत

(दुर्ग महल,स्मारक)

राजस्थान के किले एवं महल

गागरोन का किला :

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एव आबू नदियों के किनारे स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण डोड परमार शासकों ने करवाया था, इसलिए इसे 'डोडगढ' भी कहते है एव 'थूलरगढ़' भी कहते है।
- देवेन सिंह खिंची ने बीजलदेव डोड को हराकर इस पर अधिकार कर लिया था। (चौहान कुल कल्पदुर्ग के अनुसार)

जैत्रसिंह :

- 1303 में जैत्रसिंह के समय अलाउद्दीन ने आक्रमण किया था।
- संत हमीदुद्दीन चिश्ती जैत्रसिंह के समय गागरौण आए थे, जिन्हें हम 'मीठे साहेब' के नाम से जानते है। इनकी दरगाह गागरौण के किले में बनी हुई है।

प्रताप सिंह :

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- इन्हें हम संत पीपा के नाम से जानते हैं। इनके समय में फिरोज तुगलक ने गागरोण पर विफल आक्रमण किया था। संत पीपा की छत्तरी गागरौण में बनी हुई हैं।

अचलदास :

- 1423 ई. में मालवा का सुल्तान होशंगशाह गागरोन पर आक्रमण करता हैं। इस समय गागरौण के किले का पहला साका होता हैं।
- अचलदास खिंची अपने साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा जाता हैं।
- लाला मेवाडों के नेतृत्व में जौहर किया जाता हैं।
- अचलदास खिंची की अन्य रानी का नाम : उमा सांखला (जांगलू)।
- शिवदास गाड़ण ने 'अचलदास खिंची री वचनिका' नामक ग्रंथ लिखा हैं।

पाल्हण सिंह (अचलदास का पुत्र, कुम्भा का भांजा) :

- 1444 ई. में मालवा का सुल्तान महमूद खिलजी गागरौण पर आक्रमण करता हैं।
- कुम्भा अपने सेनानायक धीरज देव को भेजकर पाल्हण सिंह की सहायता करता हैं। इस समय गागरौण के किले का दुसरा साका होता हैं। महमूद खिलजी ने गागरौण का नाम मुस्तफाबाद रख दिया था। (महासिरे मुहम्मदशाही में इसका जिक्र हैं)।
- बाद में गागरोण का किला महाराणा सांगा (मेवाड़) के अधिकार में आ गया था।
- सांगा ने अपने मित्र मेदिनी राय (चन्देरी) को यह किला दे दिया।
- 1567-68 ई. के चित्ताड़ आक्रमण के समय अकबर इसके किले में ठहरता हैं और फैजी इससे मुलाकात करता हैं।
- बाद में अकबर ने यह किला पृथ्वीराज राठौड़ को दे दिया। पृथ्वीराज राठौड़ ने इसी किले में 'बेलिक्रिसण रुक्मिणी' की रचना की।
- शाहजहाँ ने यह किला कोटा महाराजा माधोसिंह को दे दिया था। कोटा महाराजा दुर्जनसाल ने यहाँ मधुसूदन का मंदिर बनाया।
- जालिमसिंह झाला ने यहाँ जालिम कोट (परकोटा) का निर्माण करवाया।

FREE SAMPLE

- औरंगजेब ने यहा बुलन्द दरवाजे का निर्माण करवाया।
- इस किले में एक जौहर कुण्ड है, अंधेरी बावड़ी, गीध कराई (यहाँ राजनैतिक ऊंची पहाड़ी बंदियों को सजा दी जाती थी) है।
- गागरौण का किला बिना नींव के (चट्टानों पर) खड़ा है। कोटा राज्य की टकसाल यहीं पर थी।

चित्तौड़गढ़ का किला :

- दुर्गों का सिरमौर
- दुर्गों का तीर्थस्थल
- राजस्थान का गौरव
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- 734 ई. में बापा रावल न मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ क किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. मे उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- चित्तौड़ के किले में तीन साके हुए : 1303 में द्वारा रतनसिंह के समय : अलाउद्दीन। 1534 में द्वारा कर्मवती के समय : बहादुरशाह। 1568 में उदयसिंह के समय : अकबर।
- कुम्भा ने कुम्भश्याम/कुम्मा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर बनवाया।
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।
- बनवीर ने नवलक्खा भण्डार बनवाया।
- बनवीर ने तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- चित्तौड़ के किले में रत्नेश्वर तालाब, भीमलव तालाब, मीरा मंदिर, कालिका मंदिर, लाखोटा बारी आदि प्रमुख है।
- चित्तौड़ का किला मेसा पठार पर मीनाकृति में बना हुआ है। धान्वन दुर्ग को छोड़कर इसमें अन्य सभी विशेषताएँ है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- यह किला गम्भीरी एव बेड़च नदियों के किनारे बसा हुआ।
- महाराणा कुम्भा ने इसमें 7 दरवाजे बनवाए।
- कुम्भा ने इसमें 'विजय स्तम्भ' (कीर्तिस्तम्भ) का निर्माण करवाया।
- चित्तौड़ के किले में एक जैन कीर्ति स्तम्भ बना हुआ है।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को एक रूपये का डाक टिकट जारी किया गया।

कुम्भलगढ़ का किला :

- महाराणा कुम्भा ने 1448 ई. से 1458 ई. के बीच इसका निर्माण करवाया।
- कुम्भलगढ़ का वास्तुकार 'मण्डन' था।
- कुम्भलगढ़ वर्तमान राजसमंद जिले में स्थित है।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़-मारवाड़ का सीमा प्रहरी कहते है।
- अत्यधिक ऊंचाई पर बना हुआ होने के करण अबुल फजल ने कहा था कि इस किले को नीचे से ऊपर की ओर देखने पर पगड़ी गिर जाती है।
- कुम्भलगढ के शीर्ष भाग में कटारगढ़ बना हुआ है जो कुम्भा का निजी आवास था। कटारगढ़ को 'मेवाड की आँख' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में उदा ने कुम्भा की हत्या (मामादेव कुण्ड के पास) की थी।
- उड़ना राजकुमार पृथ्वीराज की छत्तरी बनी हुई है। (12 खम्भों की)।
- पन्नाधाय उदयसिंह को लेकर कुम्भलढ़ के किले में आयी थी, उदयसिंह का राजतिलक यहीं हुआ था।
- महाराणा प्रताप ने भी अपना शुरूआती शासन कुम्भलगढ़ से चलाया था।
- कुम्भलगढ़ के किले को मेवाड़ शासकों की 'संकटकालीन राजधानी' कहते है।
- कुम्भलगढ़ के किले में भी कुम्भा स्वामी का मंदिर बना हुआ।
- इसी किले में झाली रानी का मालिया बना हुआ है।

कुम्भलगढ़ के दीवार की लम्बाई : 36 कि.मी.। चौड़ाई इतनी है कि आठ घोड़े .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

स्थापत्यकला –

भवन निर्माण की कला होती है, जिसमें किले, महल, मंदिर, स्तूप आदि आते है।

मूर्तिकला – मूर्ति निर्माण करना। ये प्राय धातु, पत्थर या मिटटी की बनी । होती है, जिसमें संगमरमर की मूर्तिया जयपुर की प्रसिद्ध है, जबकि कांसे की बनी मूर्तिया जोधपुर की प्रसिद्ध है तथा मिट्टी की मौलेला (राजसमंद की प्रसिद्ध है)।

चित्रकला– चित्र बनाने की कला होती है।राजस्थान में ये चित्र दीवार,स्तम्भ, छत, वस्त्र, कागज, भोजपत्र पर बनाये जाते है। उपरोक्त तीनों कलाएं रूप प्रधान कलाएं है, जिसमें सुंदरता पर जोर दिया जाता है।

संगीत कला – इसमें गीत गाना, बजाना व नृत्य करना आता है। इसमें ध्वनि की प्रधानता होती है।

काव्य/साहित्य कला - पुस्तक, ग्रंथ व कविताएं लिखना। यह अर्थ प्रधान कला है।

- **स्मारक**

- कई अद्भुत स्मारक राजस्थान राज्य के मुख्य आकर्षण हैं। इन स्मारकों में खूबसूरत किले, मंदिर और दरगाह शामिल हैं। राजस्थान के स्मारक मूल रूप से राजपूत वास्तुकला हैं जो इस्लामी वास्तुकला से पूरी तरह अलग हैं। इस शाही राज्य में प्रत्येक शहर में कई ऐतिहासिक स्मारक हैं, जिन्हें राजस्थान की स्थापत्य विरासत माना जाता है। राजस्थान के स्मारक विभिन्न संस्कृति, परंपरा और राजस्थान के महान इतिहास का संकेत देते हैं। ये स्मारक राजस्थान के शाही अतीत का प्रतिनिधित्व करते हैं और पर्यटन क्षेत्र में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। राजस्थान के कुछ प्रसिद्ध स्मारक हैं ।

हवामहल :-जयपुर में हवा महल, लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर से बनी अद्भुत पांच मंजिला इमारत है। शाही महिलाओं को बिना देखे शाही जुलूस देखने के लिए विशिष्ट

राजपूत शैली में इसका निर्माण आश्चर्यजनक रूप से किया गया है। प्रत्येक का निर्माण जाली के काम से किया गया है जिसे सुरुचिपूर्ण ढंग से ढाला और तराशा गया है।

- **जंतरमंतर** :-जयपुर के प्रसिद्ध स्मारक जंतर मंतर का निर्माण महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1728 में किया था। यह सिटी पैलेस के पास स्थित भारत में मौजूद प्रसिद्ध पांच खगोलीय स्टेशनों में से एक है और दुनिया में काम करने की स्थिति में सबसे बड़ा पत्थर वेधशाला है।

- **आमेर किला** :- आमेर किले का निर्माण राजा मान सिंह प्रथम द्वारा वर्ष 1592 में किया गया था लेकिन सवाई जय सिंह द्वारा पूरा किया गया। इसका निर्माण सफेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर के संयोजन से किया गया है। इस महल में कई प्रमुख आकर्षण हैं।

- **जैसलमेर का किला** :- जैसलमेर शहर में जैसलमेर किले का स्मारक अपनी सुनहरी रेत के साथ रेगिस्तानी क्षेत्र में एक अद्भुत रचना है। इसमें सेनाओं के लिए कई आवासीय परिसर, विभिन्न सुरक्षा स्रोत, विभिन्न उद्देश्यों के लिए हवेलियां शामिल हैं। इनका निर्माण कुशल कारीगरों द्वारा किया गया था। इसकी भव्य बालकनी, मूर्तियां, स्क्रीन वाली खिड़कियां सभी शानदार स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इन सभी किलों और महलों के अलावा, राजस्थान के प्रत्येक शहर में चित्तौड़गढ़ किला, जूनागढ़ किला, कुंभलगढ़ किला, मेहरानगढ़ किला, सिटी पैलेस जयपुर, सिटी पैलेस उदयपुर और उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर जैसे कई अन्य स्मारक हैं। इन स्मारकों का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों जैसे निवास, सुरक्षा, रक्षा आदि के लिए किया गया था। राजस्थान के इन प्रसिद्ध स्मारकों में से किसी की भी यात्रा को यादगार बना देती है।

अन्य स्मारक :-

स्मारक एक ऐसी संरचना है जो या तो खास तौर पर किसी व्यक्ति या महत्वपूर्ण घटना की स्मृति में बनाई गई है, या किसी सामाजिक तबके के लिए उसके पुराने अतीत की याद दिलाने के रूप में महत्वपूर्ण बन गई है। जैसे:-

- महान लैंडमार्क के रूप भवन
- मृतक की कब्र के निकट उसे श्रद्धांजलि देने के लिए चर्च द्वारा बनाये गए स्मारक,
- मृत शरीर को रखने के लिए मकबरे और गुम्बद,
- धार्मिक या स्मरण के लिए बनाई गयी इमारतें,
- महान नेताओं या घटनाओं की स्मृति में बनवाये गए स्मृति स्थापत्य,

राजस्थान की प्रमुख दरगाह, मस्जिद एवं मकबरे

मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह

यह अजमेर में स्थित हैं। इसे गरीब नवाज एवं सूफियों का सन्त भी कहते हैं। ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती मोहम्मद गौरी के साथ भारत आया था। उस समय अजमेर में पृथ्वीराज चैहान तृतीय का शासन था। इनके गुरू का नाम हजरत शेख उस्मान हारूनी था। इनका जन्म संजरी (फारस) में हुआ था। इस सम्प्रदाय में गुरू को पीर तथा शिष्य को मुरीद कहते हैं। इनकी दरगाह बनाने का काम इल्तुतमीश ने शुरू किया था। तथा पूर्ण हुँमायू ने करवाया था। यहाँ पर प्रतिवर्ष रज्जब महीने के । से 6 तारीख तक उर्स लगता हैं। जिसका उद्घाटन भिलवाड़ा का गौरी परिवार करता हैं। इस दरगाह में जामा मस्जिद हैं जिसका निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था।

शक्कर बाबा की दरगाहः-

यह झुन्झुनू के चिड़ावा में स्थित हैं। इसे नवाब स्हेल खाँ का मकबरा भी कहते हैं। इनका लोकप्रिय नाम नरहड़ पीर हैं। ये शेख सलीम चिश्ती के शिष्य थे। जिसे बांगड़ का .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 5

राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य

लोकनृत्य वह कला है, जिसके द्वारा हाव-भाव, अंग संचालन, भाव भंगिमाओं के माध्यम से मनोदशा को व्यक्त किया जाता हैं।राज्य के प्रमुख लोकनृत्य को चार भागों में विभाजित किया गया है ।

1. **जनजातीयों के नृत्य**
2. **व्यवसायिक लोकनृत्य**
3. **सामाजिक-धार्मिक नृत्य**
4. **क्षेत्रिय नृत्य**

विभिन्न जातीयों के नृत्य एक नजर :-

- **भील :-** -गवरी/राई., युद्ध, द्विचकरी, गोसाई., घूमरा, साद, पालीनोच, हथमनी, नेजा नृत्य ।
- **गरासिया :-** -रायण, मोरिया, जवारा, गौर, मॉदल, कूद. लूर, वालर नृत्य
- **कचाँड़ी :-** -मावलिया, होली नृत्य ।
- **मेव :-** -रणबाजा, रतदई. नृत्य ।
- **रेबारी :-** -गैर, लूम्बर नृत्य ।
- **सहरिया :-** -लहँगी, शिकारी नृत्य ।
- **भील-मीणा :-** -नेजा नृत्य ।
- **कंजर** -घोड़ी. लहरी, चकरी. धाकड़ नृत्य ।
- **गुर्जर :-** -चरी नृत्य ।
- **कालबेलिया :-** -शंकरिया. पणीहारी. बागडियां, इण्डोणी नृत्य ।

1. राजस्थान का क्षेत्रीय लोकनृत्य

- **घूमर** – राजस्थान की संस्कृति का पहचान चिह्न बन चुका 'घूमर' नृत्य राजस्थान के 'लोकनृत्यों की आत्मा' कहलाता है। यह नृत्य सभी मांगलिक अवसरों पर राज्य के अधिकांश भागों विशेषकर जयपुर एवं मारवाड़ क्षेत्र में किया जाता है। 'घूमर' शब्द की उत्पत्ति 'घुम्म' से हुईहै, जिसका अर्थ होता है, 'लहंगे का घेर'। घूमर में महिलाएं घेरा बनाकर 'घूमर लोकगीत' की धुन पर नाचती हैं। इसमें मंद गति से कहरवा ताल बजता है। बालिकाओं द्वारा किया जाने वाला घूमर नृत्य झूमरियो' कहलाता है।

- **ढोल नृत्य** –राजस्थान के जालोर क्षेत्र में शादी के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला सामूहिक नृत्य, जिसमें नर्तक विविध कलाबाजियाँ दिखाते हैं। यह नृत्य ढोली, सरगरा, माली, भील आदि जातियों द्वारा किया जाता है। इस नृत्य में कई. ढोल एवं थालियाँ एक साथ बजाए जाते हैं। ढोलवादकों का मुखिया थाकना शैली' में ढोल बजाना प्रारम्भ करता है।

- **बिंदौरी नृत्य** –राज्य के झालावाड़ क्षेत्र में होली या विवाह के अवसर पर गैर के समान किया जाने वाला लोकनृत्य, जिसमें पुरुष भाग लेते हैं।

झूमर नृत्य – हाड़ौती क्षेत्र में स्त्रियों द्वारा मांगलिक अवसरों एवं त्यौहारों पर किया जाने वाला गोलाकार नृत्य जो डाण्डियों की सहायता से .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे

दिए गये ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 7

लोक संगीत एवं वाद्य यंत्र

राजस्थान के मध्य युग में वीर रसात्मक सिंधु राग का गायन लोकप्रिय था।

राजस्थान में श्रृंगार रस राग माँड आज भी प्रचलित है जैसे मारवाड़ मेवाड़, जयपुर और जैसलमेर की माँड आदि ।

देशी व विदेशी आक्रमणों के समय जयपुर, जोधपुर , बीकानेर, मेवाड़, टोंक, अलवर, भरतपुर आदि रियासतों के द्वारा संगीत को आश्रय प्रदान किया गया।

राजस्थान के संगीत प्रिय शासकों में अलवर के महाराजा शिवदान सिंह, टोंक के नवाब इब्राहिम खां आदि प्रमुख थे।

अकबर के शासनकाल में विकसित हुई अष्टछाप संगीत परम्परा के कारण राजस्थान में शास्त्रीय संगीत की ध्रुवपद धमार, पखावज तथा वीणावादन के शैलियों का विकास हुआ जो हवेती संगीत के रूप में विद्यमान है।

वर्तमान राजस्थान के नाथद्वारा जयपुर कोटा कांकरोली भरतपुर जोधपुर के मंदिरों में हवेली संगीत विद्यमान है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान के प्रमुख संगीत घराने

विक्रम संवत की पांचवी शताब्दी में ई.रान के बादशाह बहराम गोर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया, और यहां से बाहर हजार गायकों को नौकरी के लिए ले गया। गायकों की यह लूट राजस्थान और गुजरात से ही सम्भव है, जहाँ से इतने संगीतज्ञ ले जाये जा सकते थे।" पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (हिस्ट्री ऑफ पर्सिया)

घराना - भारत में भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा को कुछ विशेष परिवारों द्वारा संरक्षित किया जाता रहा है। वर्तमान में यह परम्पराएं अपनी विशेषताओं के कारण घरानों के रूप में जानी जाती है।

घराना	**प्रवर्तक**	**विशेषताएँ**
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श	यह जयपुर घराने की उपशाखा है।
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे,नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जौधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्यथे।
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में हुआ माना जाता है।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ संगीत राज

- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई.।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त है। इसे 'उल्लास कहा गया है।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया है।
- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

राग मंजरी

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

राग माला

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमे राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया है।

शृंगार हार

रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – *प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये* ***हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें*** *, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी* ***राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2*** *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्टूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्टूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

- **प्रमुख लोक वाद्य यंत्र**

राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र सामान्य जन में प्रचलित "वाद्य" यन्त्र को लोक वाद्य कहा जाता है।

लोक वाद्यों को सामान्यतः चार प्रकार से जाना जा सकता है :

(I) तत् वाद्य (2) घन वाद्य (3) अवनद्ध वाद्य (५) सुषिर वाद्य

घन वाद्य	अवनद्ध वाद्य	सुषिर वाद्य	तत् वाद्य
चोट या आघात से स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य)	(चमड़े से मढ़े हुए लोक वाद्य(	(जो वाद्य फूंक से बजते हो(	(तारों के द्वारा स्वर उत्पन्न करने वाले वाद्य(
मंजीरा, झांझ, थाली, रमझौल, करताल, खड़ताल, झालर, घुंघरु, घंटा, घुरालियां, भरनी, श्रीमंडल, झांझ, कागरच्छ,	चंग, डफ, धौंसा, तासा, खंजरी, मांदल, मृदंग, पखावज, डमरू, ढोलक, नौबत, दमामा, टामक	बांसुरी, अलगोजा, शहनाई, पूंगी, सतारा, मशक, नड़, मोरचंग, सुरणाई, भूंगल, मुरली, बांकिया, नागफनी, टोटो, करणा, तुरही, तरपी, कानी।	जन्तर, इकतारा, रावणहत्था, चिंकारा, सारंगी, कामायचा, सुरिन्दा, रबाज, तन्दूरा, रबाब, दुकाको, सुरिन्दा, भपंग, सुरमण्डल, केनरा, पावरा।

लेजिम, तासली, डांडिया।	(बंब), नगाड़ा।		

घन वाद्य

ये वाद्य धातु से निर्मित होते हैं, जिनको आपस में टकराकर या डण्डे की सहायता से बजाया जाता है।

प्रमुख घन वाद्य (Musical Instruments of Rajasthan)

1. घुंघरु

- लोक नर्तकों एवं कलाकारों का प्रिय वाद्य 'घुंघरु' पीतल या कांसे का बेरनुमा मणि का होता है। इसका नीचे का भाग कुछ फटा हुआ होता है तथा अन्दर एक लोहे, शीशे की गोली या छोटा कंकर डाला हुआ होता है जिसके हिलने से मधुर ध्वनि निकलती है।
- भोपे लोगों के कमर में बांधने वाले घुंघरु काफी बड़े होते हैं।
- बच्चों की करधनी तथा स्त्रियों की पायल आदि गहनों में लगने वाले घुंघरु बहुत छोटे होते हैं। उनमें गोली नहीं होती वरन् परस्पर टकराकर ही छम-छम ध्वनि करते हैं।
- नर्तक (स्त्री-पुरुष) के पैरों में घुंघरु होने से छम-छम की आवाज बहुत मधुर लगती है।

2. करताल (कठताल) (KARTAL-Musical Instruments of Rajasthan)

- नारद मुनि के नारायण-नारायण करते समय एक हाथ में इकतारा तथा दूसरे साथ में करताल ही होती है।
- यह युग्म साज है।

FREE SAMPLE

- *इसके एक भाग के बीच में हाथ का अंगुठा समाने लायक छेद होता है तथा दूसरे भाग के बीच में चारों अंगुलियां समाने लायक लम्बा छेद होता है। इसके ऊपर-नीचे की गोलाई के बीच में, लम्बे-लम्बे छेद कर दो-दो झांझे बीच में कील डालकर पोई जाती है। दोनों भागों को अंगुठे और अंगुलियों में डालकर एक ही साथ में पकड़ा जाता है तथा मुट्ठी को खोलने-बंद करने की प्रक्रिया से इन्हें परस्पर आघातित करके बजाया जाता है।*
- *हाथ (कर) से बजाये जाने के कारण 'करताल' तथा लकड़ी की बनी होने के कारण इस 'कठताल' कहते हैं।*
- *राजस्थान के लोक कलाकार इन्हें इकतारा व तंदूरा की संगत में बजाते हैं।*
- *बाड़मेर क्षेत्र में इसका वादन गैर नृत्य में किया जाता है।*
- *'खड़ताल' लोक वाद्य इससे भिन्न है।*

3. रमझौल

- *लोक नर्त्तकों के पावों में बांधी जाने घुंघरुओं की चौड़ी पट्टी 'रमझौल' कहलाती है।*

रमझौल की पट्टी पैर में .....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

***नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी*

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 *की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – II

राजस्थान की भाषा एवं साहित्य

राजस्थानी भाषा-

- वक्ताओं की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 7 वाँ स्थान तथा विश्व की भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 16वाँ स्थान है।
- उद्योतन सुरी ने 8वीं शताब्दी में अपने ग्रंथ कुवलयमाला में 18 देशी भाषाओं में मरु भाषा को भी सम्मिलित किया था।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-

I. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-

- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक या ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति हैं।
- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-
2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-
3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली
4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
5. दक्षिणी राजस्थानी बोली

I. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-

- मारवाड़ी बोली बोलने वालों की संख्या क्षेत्रफल की दृष्टि से पश्चिमी राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण है।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- पश्चिमी राजस्थानी बोली में पूर्वी मारवाड़ी, उत्तरी मारवाड़ी, पश्चिमी मारवाड़ी, दक्षिणी मारवाड़ी बोली शामिल हैं।

2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-

उत्तरी पूर्वी राजस्थानी बोली में मेवातीव अहीरवाटी बोली शामिल हैं।

अहीरवाटी-

- अहीरवाटी बोली राजस्थान में अलवर जिलें के बहरोड़, मुण्डावर, किशनगढ़ के पश्चिमी भाग व कोटपूतली के उत्तरी भाग में बोली जाती है।
- अहीरवाटी बोली बांगरु (हरियाणवी) तथा मेवाती बोली के बीच संधि स्थल की बोली है।
- अहीरवाटी बोली के क्षेत्र को राठ कहा जाता है इसीलिए इसे राठी बोली भी कहते हैं ।
- जोधराज का हम्मीर रासो महाकाव्य अहीरवाटी बोली में ही लिखा गया है ।

3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली-

- मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली में ढूंढाड़ी व हाड़ौती बोली शामिल है।

4. दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली-

- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली में मालवी व रांगड़ी बोली शामिल हैं ।

मालवी-

- मालवी बोली राजस्थान के झालावाड़, कोटा और प्रतापगढ़ के मालवा से जुड़े भू-भाग में बोली जाती है।
- मालवी बोली, मारवाड़ी बोली तथा ढूंढाड़ी बोली का मिश्रित प्रभाव है।

FREE SAMPLE

5. दक्षिणी राजस्थानी बोली-

- दक्षिणी राजस्थानी बोली में नीमाड़ी व भीली बोली शामिल हैं।

2. डॉ. एलपी टेस्सीटोरी का वर्गीकरण-

- एल. पी. टेस्सीटोरी इटली के निवासी हैं ।
- एल.पी. टेस्सीटोरी की कार्य स्थली बीकानेर रही है ।
- एल.पी. टेस्सीटोरी की मृत्यु सन् 1919 में राजस्थान के बीकानेर जिलें में हुई थी ।
- एल.पी. टेस्सीटोरी की कब्र बीकानेर में ही है ।
- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने डॉ. एल पी टेस्सीटोरी को चारण साहित्य के सर्वेक्षण एवं सर्वे का कार्य सौंपा था ।
- डॉ. एल पी टेस्सीटौरी ने निम्न ग्रंथ लिखे हैं।

1. राजस्थानी चारण साहित्य एवं ऐतिहासिक सर्वे
2. पश्चिमी राजस्थानी व्याकरण

डॉ. एल पी टेस्सीटौरी ने मालवा व राजस्थान की भाषाओं को दो भागों में विभाजित किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली या मारवाड़ी बोली
2. पूर्वी राजस्थानी बोली या ढूंढाड़ी बोली

1. पश्चिमी राजस्थानी भाषा-

- पश्चिमी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप डिंगल है ।
- पश्चिमी राजस्थानी भाषा का उद्भव गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- पश्चिमी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।

2. पूर्वी राजस्थानी भाषा-

- पूर्वी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप पिंगल है ।

FREE SAMPLE

- पूर्वी राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है ।
- पूर्वी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव ब्रज भाषा का रहा है ।

पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां-

मारवाड़ी बोली-

- मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- मारवाड़ी बोली के साहित्यिक रूप को डिंगल कहते है।
- मारवाड़ी बोली का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है ।
- मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8 वीं सदी है।
- मारवाड़ी बोली पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है ।
- मारवाड़ी बोली पश्चिमी राजस्थान की प्रधान या प्रमुख बोली है।
- मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बोले जाने वाली बोली है ।
- जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश रचना यें मारवाड़ी में है ।
- राजियारा सोरठा, वेलि क्रिसन् रुकमणी री, ढोला-मरवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित है।
- विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) बोली राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर, जालौर, सिरोही, शेखावाटी, जोधपुर , व जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- मारवाड़ी की उपबोलियां-

  1. गौड़वाड़ी
  2. देवड़ावाटी
  3. थली
  4. शेखावटी

FREE SAMPLE

गौड़वाड़ी-

गौड़वाड़ी बोली राजस्थान में पाली एवं .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

बीमा एवं बैंकिंग प्रणाली

अध्याय – I

बीमा एवं बैंक के प्रकार

बीमा भविष्य में किसी नुकसान की आशंका से निपटने का प्रभावी हथियार है. हमें नहीं पता कि कल क्या होगा, इसलिए हम बीमा पॉलिसी के जरिये भविष्य में संभावित नुकसान की भरपाई की कोशिश करते हैं.

इंश्योरेंस का मतलब जोखिम से सुरक्षा है. अगर कोई बीमा कंपनी किसी व्यक्ति का बीमा करती है तो उस व्यक्ति को होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई बीमा कंपनी करेगी. इसी तरह अगर बीमा कंपनी ने किसी कार, घर या स्मार्टफोन का बीमा किया है तो उस चीज के टूटने, फूटने, खोने या क्षतिग्रस्त होने की स्थिति में बीमा कंपनी उसके मालिक को पहले से तय शर्त के हिसाब से मुआवजा देती है.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

बीमा वास्तव में बीमा कंपनी और बीमित व्यक्ति के बीच एक अनुबंध है. इस कॉन्ट्रेक्ट के तहत बीमा कंपनी बीमित व्यक्ति से एक निश्चित धनराशि (प्रीमियम) लेती है और बीमित व्यक्ति या कंपनी को पॉलिसी की शर्त के हिसाब से किसी नुकसान की स्थिति में हर्जाना देती है.

बीमा (Insurance) कितने तरह का होता है?

आम तौर पर बीमा दो तरह का होता है:

जीवन बीमा (Life Insurance)

साधारण बीमा (General Insurance)

जीवन बीमा में किसी इनसान की जिंदगी का बीमा किया जाता है.

जीवन बीमा (Life Insurance): - जीवन बीमा (Life Insurance) का मतलब यह है कि बीमा पॉलिसी खरीदने वाले व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसके आश्रित को बीमा कंपनी की तरफ से मुआवजा मिलता है.

अगर परिवार के मुखिया की असमय मृत्यु हो जाती है तो घर का खर्च चलाना मुश्किल हो जाता है. परिवार के मुख्य व्यक्ति की पत्नी/बच्चे/माता-पिता आदि को आर्थिक संकट से बचाने के लिए जीवन बीमा पॉलिसी लेना जरूरी है. वित्तीय योजना में सबसे पहले किसी व्यक्ति को जीवन बीमा (Life Insurance)पॉलिसी खरीदने का सुझाव दिया जाता है.

साधारण बीमा में वाहन, घर, पशु, फसल, स्वास्थ्य बीमा आदि सभी शामिल हैं.

घर का बीमा (Home Insurance): अगर आप अपने घर का बीमा किसी साधारण बीमा कंपनी से कराते हैं तो इसमें आपके घर की सुरक्षा होती है. बीमा पॉलिसी खरीदने के बाद अगर आपके मकान को किसी भी तरह का नुकसान होता है तो उसका हर्जाना बीमा कंपनी देती है.

आपके घर को किसी भी तरह के नुकसान से कवरेज इस बीमा पॉलिसी में शामिल है. घर को प्राकृतिक आपदा से हुए नुकसान में आग, भूकंप, आकाशीय बिजली, बाढ़ आदि की वजह से होने वाला नुकसान शामिल है. कृत्रिम आपदा में घर में चोरी होना, आग, लड़ाई-दंगे आदि की वजह से घर को हुआ नुकसान शामिल है.

वाहन बीमा (Motor Insurance): भारत में सड़क पर चलने वाले किसी वाहन का

बीमा कराना कानून के हिसाब से बहुत जरूरी है. अगर आप अपने वाहन का बीमा कराये बिना उसे रोड पर चलाते हैं तो आपको ट्रैफिक पुलिस जुर्माना कर सकती है. मोटर या वाहन बीमा पॉलिसी के .....

***नोट** – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

अध्याय – 2

भारतीय रिजर्व बैंक और उसके कार्य

भारत में Banking व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान RBI का है RBI की स्थापना, RBI । April अधिनियम 1934 के अन्तर्गत 1935 में की गई थी । Jan 1949 इसका राष्ट्रीयकरण किया गया एवम् भारत सरकार के अधीन लाया गया RBI के प्रथम governor sir ओस्बोर्न स्मिथ थे RBI के प्रथम भारतीय governor C.D. Desh mulkh थे RBI की प्रमुख जिम्मेदारीयों को दो हिस्सों में वर्गीकृत किया जा सकता है - पारम्परिक जिम्मेदारीयाँ एवम् अस्थाई जिम्मेदारीयाँ, अस्थाई जिम्मेदारियां समय पर उत्पन्न होती हैं एवम् इनके पूरे हो जाने पर RBI इन जिम्मेदारियां मुक्त हो जाती हैं उदाहरण स्वरूप वित्तिय समावेशन इससे भिन्न RBI की पारम्परिक जिम्मेदारियां निरन्तर चलती रहती हैं यह जिम्मेदारियां निम्नलिखित हैं.

- RBI भारत सरकार एवम् राज्य सरकारों के लिए बैंक का कार्य करती हैं अर्थात् भारत सरकार एवम् राज्य सरकारें अपनी अधिशेष सारी RBI के पास जमा रख सकती हैं एवम् आवश्यकता पड़ने पर RBI इनके लिए ऋण की प्राप्ति भी करती है वर्तमान में सिक्किम को छोड़ सभी राज्यों को यह सुविधा प्रदान करती हैं। केन्द्र शामिल प्रदेशों में यह सुविधा मात्र पुडुचेरी को प्राप्त ।
- RBI बैंकों के लिए बैंक का कार्य करती हैं अथार्त बैंक अपनी अधिशेष राशि RB के पास जमा रख सकते हैं एवम् आवश्यकता पड़ने पर RBI से ऋण प्राप्त कर सकती हैं
- RBI, अनुसुचित बैंकों की स्थापना के लिए लाइसेंस प्रदान करती है. एवम् भारत में बैंकिक व्यवस्था का संचालन भी करती हैं विदेशी बैंकों को स्थापना के उपरान्त भी नई शारवाएं स्थापित करने के लिए RBI से अनुमति की आवश्यकता पड़ती है भारतीय बैंक RBI से अनुमति के बिना शारवाएं स्थापित कर सकती है परन्तु RBI के नियमों के अनुसार इनकी कम से कम 1/4 शरवाएं ग्रामीण क्षेत्रों में होनी चाहिए

FREE SAMPLE

- RBI भारत में मौद्रिक नीतियाँ जारी करती हैं जिसके माध्यम से यह तरलता को नियंत्रित करती हैं एवम् मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करती हैं साथ ही आर्थिक संवृद्धि को प्रबंधित करती हैं

RBI कुछ श्रेणी की गैर बैंकिंक वित्तिय संस्थानों को भी नियंत्रित करती हैं (Non Banking Finacial companies NBFC) इन वित्तीय संस्थाओ छाया बैंक

RBI भारत में विदेशी मुद्रा का भण्डारन करती हैं भारत अपने विदेशी मुद्रा कोष मे अमेरिकी डोलर, पांड, यूरो, यन एवम् सोना रखता हैं।

RBI भारत में एक रूपय से ऊपर के नोट जारी करती है एक रुपये का नोट एवम् सभी

.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – I

सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति

***सामाजिक विज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-**

=> सामाजिक अध्ययन विषय को आरंभ करने का श्रेय अमेरिका को है।

=> आरंभ में सामाजिक अध्ययन का नाम उन विषयों के समुह को दिया गया जिसमें इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र शामिल थे। यह नामकरण 1892 में हुआ ।

=> बाद में इसमें समाजशास्त्र भी जोड़ा गया।

=> सामाजिक अध्ययन के इस स्वरूप को सरकार की ओर से मान्यता 1916 में 'Committe on the Social Studies of Secondry education '

के प्रतिवेदन में दी गई और इसे एक विषय के रूप में स्वीकार करने का सुझाव दिया गया।

=> 1921 में इस विषय के संबंध में विस्तृत अध्ययन के लिए अमेरिका में राष्ट्रीय विकास परिषद का गठन किया गया।

=> 1934 में 'सामाजिक अध्ययन ' पर एक कमीशन की नियुक्ति की गई। जिसके उपरांत इस क्षेत्र में बहुत से अनुसन्धान हुए और सामाजिक अध्ययन के एकीकृत स्वरूप का विकास हुआ और इसे एक क्षेत्र अध्ययन के रूप में मान्यता दी गई।

=> अमेरिकी विद्यालयों में 1920 से 1955 का समय सामाजिक अध्ययन का स्वर्णकाल माना जाता है।

FREE SAMPLE

=> भारत में माध्यमिक शिक्षा आयोग - डॉ. लक्ष्मण स्वामी मुदालियर आयोग (मद्रास विवि के कुलपति की अध्यक्षता में सितंबर 1952) ने छात्रों के सामाजिक वातावरण से अनुकूलन के लिए इस विषय का अध्यापन अनिवार्य माना।

=> भारत में सर्वप्रथम पंजाब सरकार ने अपने शिक्षा सलाहकार बोर्ड की सिफारिश को मानते हुए 1949 ई. राज्य के सभी स्तरो पर सामाजिक अध्ययन का अध्यापन निश्चित किया।

=> वर्ष 1950 - 1965 के मध्य भारत में प्रायः सभी राज्यों में इस विषय को विद्यालयी शिक्षा में शामिल कर लिया गया।

=> 1952 - 53 में मुदालियर आयोग ने सर्वप्रथम विद्यालयों के लिए इस विषय की सिफारिश की। इन्होंने सामाजिक पर्यावरण के एकीकृत विषय के रूप में शुरू किया।

=> इस आयोग ने इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र आदि विषयों का एक इकाई के रूप में अध्ययन करने की सिफारिश की।

सामाजिक अध्ययन का अर्थ :-

=> सामाजिक अध्ययन शब्द सामाजिक और अध्ययन से मिलकर बना है।

=> सामाजिक का अर्थ समाज के लिए या समाज द्वारा अर्थात समाज द्वारा समाज के लिए अध्ययन

=> सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत मनुष्य का मनुष्य से तथा उसका वातावरण के साथ स्थापित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

=> यह मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष, सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, ऐतिहासिक को स्पर्श करता है।

=> इसमें विविधता है जो मानव को अनुभव ग्रहण करने में मदद करता है।

सामाजिक अध्ययन की परिभाषाएँ :-

FREE SAMPLE

(1) जे. एफ. फारेस्टर :-

"सामाजिक अध्ययन उस समाज का अध्ययन है, जिसमें रहकर छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। "

(2) NCERT के अनुसार :-

"सामाजिक अध्ययन मनुष्यों तथा सामाजिक और भौतिक वातावरणों के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन है। "

(3) जेम्स हामिंग महोदय :-

"सामाजिक अध्ययन ऐतिहासिक, भौगोलिक और सामाजिक संबंधों तथा अन्तसंबंधों का अध्ययन है। "

सामाजिक अध्ययन की विशेषताएं :-

=> इसकी विषय वस्तु का केन्द्र मानव है। यह मनुष्यों और उसके समुदायों का अध्ययन करता है।

=> यह मानवीय संबंधों पर बल देता है।

=> यह सामाजिक संस्थाओं की उत्पत्ति और उनके विकास की जानकारी देता है।

=> यह उत्तम नागरिकता के विकास में सहायता प्रदान कर.....

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE

- **Topic - 2**

कक्षा - कक्ष की प्रक्रियाएँ क्रियाकलाप एवं विमर्श

***प्रभावी कक्षा - कक्ष प्रक्रिया :-**

=> एक प्रभावी कक्षाकक्ष प्रक्रिया के लिए आवश्यक तथ्यों एवं स्थितियों का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है -

(1) **अच्छी कक्षा -** कक्ष प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण होती है अर्थात् शिक्षण अधिगम संबंधी समस्त क्रियाओं को पूरा करने से पहले उसके विभिन्न सैद्धांतिक तथा विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण कर लिया जाता है इसके बाद ही विभिन्न क्रियाओं का आयोजन किया जाता है।

(2) **कक्षा -** कक्ष प्रक्रिया में विभिन्न गतिविधियों का निर्धारण छात्रों की योग्यता एवं उनकी रुचि को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

=> **अच्छी कक्षा -** कक्ष प्रक्रिया में प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध ढंग से पूरा होता है।

=> **कक्षा -** कक्ष प्रक्रिया में छात्रों की गतिविधियों को संपन्न करने के अधिक अवसर देने चाहिए।

शिक्षक को इन Activities को करने में आने वाली समस्याओं को दूर करने में help करना चाहिए।

=> **कक्षा -** कक्ष प्रक्रिया के मुख्यतः तीन तथ्य होते हैं -

(1) शिक्षक

(2) शिक्षार्थी और

(3) पाठ्यक्रम इन तीनों के आधार पर ही सम्पूर्ण कक्षा - कक्ष प्रक्रिया निर्धारण होता है।

=> अच्छी कक्षाकक्ष में मूल्यांकन में प्रयुक्त विधियों का .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे - 2

पृच्छा / अनुभाविक साक्ष्य

=> पृच्छा का शाब्दिक अर्थ होता है पूछताछ

=> पृच्छा प्रतिमान का प्रतिपादन अमेरिका के

इलिनायस विश्वविद्यालय ' में प्रोफेसर रिचर्ड सचमैन के द्वारा 1962 में किया गया

=> पूछताछ व्यक्ति में जिज्ञासा की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है जिससे व्यक्ति नवीन ज्ञान की खोज करता है। और यह खोज पूछताछ के माध्यम से होती है।

=> प्रारंभ में पृच्छा प्रतिमान का प्रयोग केवल भौतिक शास्त्र की समस्याओं के समाधान हेतु किया गया किन्तु बाद में इसका प्रयोग अन्य विषयो पर भी सफलता पूर्वक किया गया।

=> प्रो. रिचार्ड सचमैन ने अपनी पुस्तक " The elemantry shcoll training programme in scientific enquiry " में लिखा कि, "पूछताछ का अर्थ विश्वास है तथा यह किसी विशेष विभिन्न की सचेत अवस्था के विभिन्न पहलुओं में एवं नवीन संबद्धता के पाने की इच्छा से प्रेरित होती है।"

=> प्रो. रिचार्ड सचमैन ने पृच्छा प्रतिमान में ज्ञानात्मक व्यवहार प्रतिमान में ज्ञानात्मक व्यवहार से सूचना संसाधन सिद्धांत (information Processing theory) को आधार बनाया है।

***पृच्छा प्रतिमान की विशेषताएं :-**

=> यह छात्रों में प्रश्न पूछने की कला का विकास करती है।

=> यह वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उपयोगी है।

FREE SAMPLE

=> यह पद्धति समाधान के लिए उपयुक्त है।

=> इसके द्वारा विद्यार्थी को स्पष्ट व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

=> यह सृजनात्मकता पर आधारित है।

=> इस पद्धति का प्रयोग सभी शैक्षिक परिस्थितियों में किया जा सकता है।

=> यह पद्धति विद्यार्थियों में स्वतंत्र सोच का विकास होता है।

=> इसमें छात्रों में नवीन ज्ञान के प्रति उत्सुकता उत्पन्न होती है।

=> यह छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने में .....

नोट – प्रिय पाठकों , यह अध्याय अभी यहीं समाप्त नही हुआ है यह एक सैंपल मात्र है / इसमें अभी और भी काफी कंटेंट पढ़ना बाकी है जो आपको **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** के इन कम्पलीट नोट्स में पढ़ने को मिलेगा / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये **हमारे संपर्क नंबर पर कॉल करें** , हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी **राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे, धन्यवाद /

FREE SAMPLE

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न	
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 (98 MARKS)	
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 of 200	
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 of 200	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 of 150	
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 of 150	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 of 100	
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 of 100	
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 of 160	
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 of 160	

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

FREE SAMPLE

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें /

संपर्क करें - 8233195718, 8504091672, 9694804063

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

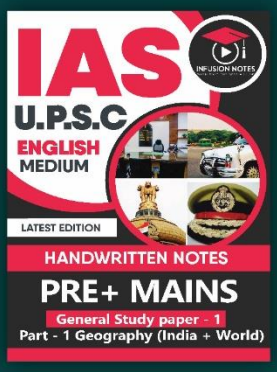
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

AVAILABLE ON/

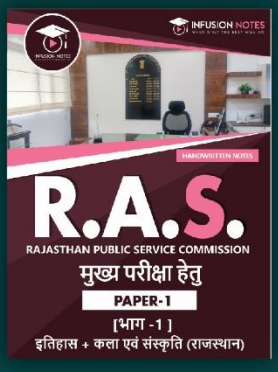
www.infusionnotes.com
01414045784
contact@infusionnotes.com

OTHER EDITIONS...













whatsapp-https://wa.link/cptty4110website-https://bit.ly/reet-level-2-sstnotes